

आज Wireless की बात सुनो जो तू करता होगा, कर्म करेगा, प्यार करेगा, करेगा तो तुम्हारी Wireless नहीं चलेगी, Engage। ये दूरदर्शी की बात है कि लगातार सब के लिए प्यार है, पर कट कट नहीं है। छोटा बड़ा नहीं है। इनसे है, इनसे नहीं होता मेरा प्यार। मेरा प्यार अपने से है न। अपने से प्यार होता है या नहीं? तो यह कौन है, जब अपने आप ही है। तुम दूसरा समझकर काला मुहँ करते हैं, Time Waste करते हैं। जो सचमुच निजी प्यार है वो तुम जानते नहीं है। वो अर्जुन को भगवान बोलता है, तुम्हारा उत्तम संस्कार है तभी मैं तुम्हारे को ज्ञान सुनाता हूँ। उत्तम संस्कार तू जो बोलता है कि मैं तिनके को भी दुखी नहीं करेगा। इन्साफ -इन्साफ को ऐसा शब्द बोलता है कभी-२ जो एकदम दुखी करके आएगा, उसके Heart को धक्का लगाएगा पर कभी बुलाकर प्यार ते समझाएगा नहीं कि (बात जो है ऐसी है-२)। सब उत्तमने के लिए तैयार है पर तुमको समझाना नहीं आता है, तो तुम घर में गुस्ता होता है। बहु से, बेटे से, नौकर से, सेठ से, सबसे गुस्सा क्यों निकालता है, क्यों कि उसको समझाना नहीं आता है। उसके Level पर बात नहीं करता है कि उसकी Level ऐसी है, ये यहाँ से समझेगा, कि उसकी Level कितनी है। ये कहाँ से सुनेंगे, कितना हजाम करेंगे, इतना प्यार दिखाओ। पहले प्यार करो, पीछे 10 गाली दियो उसको, तो ऐसा झट पकड़ेगा, पर प्यार तुम्हारे पास है ही नहीं। प्यार किसके मून में भी नहीं, किसके भी।

समझो यहाँ बैठकर भी हम प्यार भेजेगा तो वो हमको Post में प्यार भेजेगा। Wireless ये Wireless है। भगवान ने सबमें Wireless डाली है, जैसे यह बाहर Wireless है न, कितना Wireless काम करती है? कितना Telegram काम करता है? कितना Telephone काम करता है? अरे वो तो ज़ङ है, कभी-२ Fail हो सकता है, पर जो अन्दर की Wireless है वह तुमने किसी को भेजी नहीं, किसको भी नहीं। Thank you तुम करते हैं, हम करते भी नहीं है, पर Wireless मेरी चाल है। हम Doer होगा, कर्ता होगा, Aggressor होगा तो मेरी Wireless दूटी पङ्गी होगी, Connection Cut, पर जभी मेरे अन्दर में खाली Wireless है

फक्त Wireless प्यार की, सब की भलाई की, सब मेरी जात है, मेरी आत्मा है, सब मेरा रुप है, कोई गोप्ता नहीं है। पर तुम्हारा ऐसा स्वभाव है ।

जो उसे [भगवान को] पढ़ोरी से भी दूर समझा है, तभी कहता है भगवान ऐसा करता है, ऐसा नहीं करता है। कितना भगवान को तुम लोग दूर समझ कर प्रेम करता है? माना वह दूर है ना? जब कि वो मेरे नेरे से नेरे है, मेरी आँख से भी नज़दीक है, मेरी आत्मा से भी नज़दीक है। इसकी आँख में रोशनी किसकी है? जो आँख सच्ची होवे तो अन्धे को भी रोशनी होवे, पर ज्ञान अन्धे को रोशनी देता है, अन्धा भी पाँव में जूता पहनेगा तो बोलेगा यह मेरा नहीं है। अन्धा भी तेरा शब्द सुनेगा, बोलेगा ये फलाणा है। ये आँख में रोशनी सच्ची नहीं, जो सच्ची होवे तो इससे भी Change क्यों आवे। जो चीज़ Changeable है वो सच्ची नहीं है, सत्य नहीं है। और जो चीज़ सत्य है, उसमें Change आयेगी नहीं, हमेशा रहेगी।

प्रेमी : ये बराबर पकड़ा Wireless, पहले गलती करते थे, अब समझा।

भगवान : जो Wireless वाला प्यार करेगा, वह सबको सुनेगा, सब की ममता करेगा, सबकी। अभी तुम सत्संगी है, तो तेरे को सत्संगी ही बुलायेगा ना, वो ही सेवा देगा, वो ही कर्म करेगा, तो तुमको सोचने की ज़रूरत ही नहीं है। बाकी जो दुनिया है उसको कौन मिलेगा - सतोगुणी, रजोगुणी, तनोगुणी। इधर तो तीन गुण से मैंने न्यारा कर दिया। तुम साक्षी चेतन आत्मा है, तेरे में कोई भी गुंजाइश नहीं है। एकदम जो Light है देखो Light क्या काम करती है, गर्म भी करती है, ठंडा भी करती है, Fan भी चलाती है। तुमको शर्म नहीं आती कि एक जड़ चीज कितना सुख देती है, अजब यह बात है। A.C. भी चलाता है तो वो Heater भी चलाता है तो इसमें कौन सी बात है, Instrument माना हथियार, औजार। तो अन्दर औजार को Change कर सकते हैं या नहीं? जैसे कोई Number 1,2,3 पहचानता है, कोई कैसे चलाता है। ऐसे करते हैं न तुम, अभी High चलाओ Low चलाओ। तुम लोग सीधे चलते हैं, ऐसे High और Low नहीं करते हैं। Instrument अन्दर change नहीं करते हैं कि अभी इस Instrument की ज़रूरत नहीं है। अभी बीच में खड़ा रहना है, अभी उपर आना है, किसी के Heart में तुम्हारी बात

जाती नहीं। ये तमको सुनता नहीं, ये तम्हारे से बात नहीं करता, डरता है तेरे से। मनुष्य मनुष्य से डरे ये क्या बात है। तुम्हारे से कोई डरे तो "हरि ओम"। तुम प्यार करो उसके आगे नीचे झुको और झुको। जैसे माँ बेटी बन जाए, बेटी माँ बन जाए। गुरु को शिष्य बनना पड़ेगा तभी ये काम चलेगा, नहीं तो शिष्य को ताकत कैसे आएगी? वो शिष्य ही रहेगा, गुरु गुरु ही रहेगा। फिर भी दुनिया की विद्या में Student Teacher हो सकता है, पर ये ज्ञान में नहीं होता है। क्यों कि वह देह वाला चालाक है, ठगी करते हैं, चालाकी करते हैं या उसमें वो रमज़ नहीं। Instrument की रमज़ ही नहीं है तो अभी कौन सा Instrument डाले जो Heat मिले या ठण्डक मिलें या कौन सा time है या ये मनुष्य मेरा कितना सहन कर सकेगा? कितना मेरे को प्यार करके वश करने का है, ये सब ज्ञान के Wireless से सब आएगा। तुमको Change करना नहीं तो तुम सीधी Level पर चलता है। यह अन्दर से चला तो कहाँ से भी लोग तेरे को आकर झुकेगा, प्यार करेगा और तुम्हारा कुछ बनेगा, और आकर तुम्हारे से प्यार निकालेगा। तू देगा जो ज्ञान। जो किसी को देह देखता है, वह चमार है, कर्म देखता है, विकार देखता है। तुमको विकार देखने की कितनी तनख्वाह निलती है? तुमको जो रास्ता पकड़ना है वह पकड़ो। अभी हम जो रास्ता पकड़ कर आए तो एक भी मोटर वाले ने नहीं रोका कि इधर जाओ, इधर न जाओ। तू तो रोकता है किसी को भी रास्ता रोकता है कि ये ऐसा करता है, करने दो। ऐसा बोलता है, बोलने दो। ऐसे भूत है भी नहीं, पर तुम को भूत दिखाई देता है। वो कितना भी नीच बुद्धि करे, पर ज्ञान के बाद नीच बुद्धि नहीं लगता, डर नहीं लगता। पर तू इनसे भी डरेगा, उनसे भी डरेगा, ये नाराज़ न होवे, तो तुमको उनसे क्या चाहिए। सब की जुदा दृष्टि है, जुदा-२ भावना है, पर सम दृष्टि नहीं है जो हम रोज़ मारा मारी करते हैं। सम दृष्टि करके दंखो नज़र आवंदा। इन लोगों के पास सम दृष्टि नहीं है। सम प्यार नहीं है। ज्ञान अपनी Will से उठाते हैं, गुरु की Will से नहीं। गुरु की भावना से गुरु को जानेगा। अपने को ही मोड़ना है, न कि घर वालों को। घरवाले अज्ञानी हैं, उनको नहीं मोड़ना। जैसे हम मुझे रास्ते में हम अपना रास्ता लेकर आये।

** दुनिया में सब तारें टूट सकती हैं, पर आत्मा को आत्मा जान कर जो

तार जुङती है वो कभी भी नहीं टूट सकती है। पीछे प्रेम सच्चा शुरू होता है वो कभी भी टूट नहीं सकता है। दुनिया में जो Connection है वो सब झूठे हैं, क्यों कि सच्चा प्रेम हो ही नहीं सकता है जब तक सब कुछ इधर से तोड़ कर उधर से बने, ये एक भजन की Line है प्यार की तार इधर से सजे और उधर से बजे। निराकार ने ऐसी तार बनाई है जैसे Main Switch से सबको रोशनी आती है, ऐसे ही गुरु जो भगवान है, निराकार है, सत् है, अविनाशी है, उससे हम तार जोड़ सकते हैं अगर हमारा कहीं भी ध्यान नहीं है।

** एक दिल को तोड़ेंगे तो सब तीर्थों का पाप तुम्हारे उपर है। तुम को तोड़ना जल्दी आता है, एक शब्द से तोड़ देगा। पर कितना जोड़ेगा। तुम बोलो मैं प्रेम से सबको मिला के एक कर देंगे। भले झप्पी न लगाओ पर वो तुमसे मिलकर एक हो जायेंगे, उसको मालूम भी न पड़े कि मैं कैसे मिलके एक हो गया। ये प्रेम की परिभाषा है तुम उसके सिवाय नहीं रह सकेगा। जो तुम्हारे सिवाय सब की आशिष उसमें होती है, जो हम सब के दिल को जोड़े नहीं तो आशिष नहीं निकलेगी। फिर मांगना नहीं पड़ेगा, गुरु से भी नहीं। गुरु भी देखेंगे कि ये तुम सब की दिल जोड़ेंगे, भगवान देखेंगे कि तुम स्वार्थी नहीं है। जो सबकी दिल को जोड़ता जाये और अपने को भूल जाए, परवाह ही न करे अपनी। सारी दुनिया परवाह करती है अपने देह की तो ग़ज़ा नहीं लेते हैं। तम्हारा प्यार कहाँ तक पहुंच सकता है बगैर Telephone के। World ने Lord है एक ही पर उससे Wire नहीं मिलाते हैं। जो Electric में Wire है जो Telephone America से आता है इतना नज़दीक लगता है, इधर पाण हमारे शहर में Engage मिलता है, उधर सरल [जब कि बिना तार का है] तो कैसे Wire को जोड़ते हैं तो बाकी Heart को Wire(Vibration) नहीं पहुंचती है? ऐसे अन्दर से प्रेम करो, प्रेम माना Action नहीं, पर मेरे अन्दर द्वैत की लहर भी न उठे। जो गुजरा सो गुजर गया, बाकी जो Time है आज भी सब कुछ कर सकते हैं, Wire को सबसे जोड़ दो। टूटे गढ़न हार गोपाल। गोपाल जो है परमात्मा वो टूटे दिल को मिलाता है। दुनिया पाण जुड़े हुए को तोड़ती है। दो आदमी प्यार करेगा तीसरा पाण चुगली लगाएगा, चुगली लगाकर दो को तोड़ देगा। भगवान ने सबको प्रेम दिया

है तो हम विशालता की Wire कितनी लम्बी रखते हैं तो पहुंच जाती है। मनुष्य संसार से ठोकर ही खाता है तो अतृप्त हो जाता है। किसने भी किसको प्रेम नहीं सिखाया है। सन्तों ने भी माया का सौदा किया, पर प्रेम का सौदा नहीं किया कि एक कौँझी भी तुम्हारे काम की नहीं। हमको शुरू से ही अद्वैत ऐसा पसन्द आया जो मेरे से कोई मिले व्यवहार की बात पूछे तो हम उसको भी अद्वैत ही पकड़ा देते हैं, रामझो दादा भी मेरे को भुलाने आये कि ये किसने बनाया तो हम बोलेंगे आपने तो बनाया। आपने तो कराया। किस Time किया? जभी आपने कराया होगा, तभी हुआ होगा। कोई बोलेगा आपके कितने बच्चे हैं? हम बोलते थे सारी दुनिया के बच्चे मेरे हैं। उसके भी अन्दर में लगता था ये कैसे है! मेरे को अद्वैत इतना सरल लगा कि जान छूटी सतकर्म से बदकर्म से सबसे जान छूटी। व्यवहार भी छूटा, मर्यादा भी छूटी। हमको शुरू से सतकर्म अच्छा नहीं लगता था कि सन्तों को हज़ार लोग देते हैं, मैं कैसे दूँ। तुम है कहाँ, नाम किस पर पड़ा। मेरे को दुख होता है कि कोई मेरा संग करे और पूरी समझ न लेवे तो देखो भिण्डी भी खरीद करेंगे, बनायेंगे। ये तो Already Wireless है, Swith डाला बन गया

ओम

एक शब्द गीता का याद करोः हे अजुन सत् का अभाव करके बैठे हैं। असत् का भाव करेंगे और सत् का अभाव करेंगे तो असत् में सारा जगत् है। शरीर है, सब है, Total असत् चीज़ें, जो है सब तो मिथ्या है, उसको हम भाव देते हैं। मेरी बहन भी सत् है, मेरी माँ भी सत् है, मेरा पैसा भी सत् है, मेरी इज्ज़त भी सत् है, पर जो सत् परमात्मा है उसका अभाव है। आज सत् का अभाव समझना, सब असत् को पकड़के बैठे हैं और असत् आपे ही चलता है, Changeable है। सब आपे ही होता है तो असत् में हम क्या करें, हम खाली खेल देखेंगे असत् का और सत् को निश्चय में रखेंगे कि इधर हम द्वैत क्यों करें? क्या दृश्य देखा क्यों देखा, ये देह में आता है, तो दृश्य देखता है पर जे देह रहित होकर देखता है तो सत् ही सत् है सब में सत् है ना।

प्रेमी : सत् को पकड़ें कैसे ?

भगवान् : पकड़ना नहीं है पर जानना है कि है ही सत्, हम देह में झूठ में धक्का खाते हैं, जगत् में धक्का खाते हैं, जगत् का दुख सुख भासता है तो क्यों भासता है, क्यों कि हम असत् में पड़े हैं और सत् की कीमत नहीं करते हैं। जोकर कोई सत् का ख्याल करें, तो देखे कि उनके हुकुम से सब होता है। उस सत् से सब हो रहा है, पर असत् वाले को विश्वास नहीं है। तुमने आसिन्त रखी है तो मिथ्या में रखी है, सत् ने नहीं रखी है। इससे अच्छा है तू सत् में रख आसक्ति और असत् को मिथ्या समझ फिर तुमको खुशी आ जाएगी, बोलेंगे अरे इसको जाने दियो ये मेरी ज़रूरत है क्या? इसके सिवाय भी हम चल सकेंगे। ऐसे हमारी इच्छा चली जाएगी कि मैं क्यों असत् के पीछे पड़ूँ।

प्रेमी : असत् में हमारी आसक्ति है तो ये हमारी आदत है या निराकार में विश्वास नहीं है?

भगवान् : नहीं, जो संस्कार पहले वाले हैं, ऐसे रहना, ऐसे खाना, ऐसे चलना वो ही हम करते हैं, माना अपने को इम Change नहीं करते हैं कि इधर तुमने नहीं देखा तो क्या हुआ, ऐसा भन नहीं किया तो क्या हुआ ऐसे वापस अपने में लाओ, ऐसे वो पुरानी आदत हमारी छूट जाए, जो

Contd.2.

[2]

पुराना संस्कार है, आदत के वश सब है। कौन है जो आदत के वश नहीं है, स्वभाव में वश नहीं है, Nature के वश है, पर I am free, हम किसी के वश में क्यों आयें? I am free, हम अपने को free करें सबसे और हमारे से सब हो सकता है। कभी नहीं बोलो कि ये बात मैं नहीं कर सकता हूं, तुम नहीं कर सकता है पर वो तुम्हारे से प्रेम करके करा देता है, तो प्रेम का तो तुमको गुलाम करेंगे ना।

प्रेमी : सत् के प्रति आसक्ति रखो, भगवान इसे खोलिए।

भगवान : सत् में आसक्ति है असत् में ख्याल ही नहीं है। असत् में ख्याल नहीं जाता है क्योंकि असत् समझा कि अभी ये जीता है आज है, कल नहीं होगा, फिर मेरे को क्या होगा? तो हम पहले से ही छुट्टी लेके बेरेंगे सारे संसार से। आज ये चीज़ है कल नहीं होगी। आज मैं शाहूकार हूं या गरीब हूं तो भी सब चलेगा पर ये नहीं कि मैं पहले जैसा दुखी होंगे, जैसे अज्ञान में रोते थे, दुखी होते थे कि देखो ये मेरे को अच्छा लगता है, ये ऐसा वो ऐसा। अभी किसी के जाने में जोकर दुखी होगा? कौन सी चीज़ चली जाए तो तुमको भगवान को बोलना पढ़े कि ये क्या किया? कौन कहे साहब नूँ... सोचो ये बात ये भी चला जाए-२ अभी है तो इस्तेमाल करो, नहीं तो चले जाने पर दुखी नहीं।

प्रेमी : अद्वैत (सत्) में कैसे रहें?

भगवान : कैसे न, पर सत् का भाव करो तो द्वैत है नहीं। असत् का भाव करते हैं तो द्वैत में है, सत् में कौन सा द्वैत है। मैं ही हूं सबके हृदय में।

प्रेमी : अगर असत् को Importance नहीं देंगे तो अपने आप वो चला जाएगा? सत् का भाव आएगा?

भगवान : सत् का भाव है ना। असत् को थोड़ी धिकारने का है। असत् अपनी जगह खड़ा है, पर हमको धिकारना नहीं है कि ये असत् है। कभी शब्द में गुंज़ नहीं करने का है कि ये ऐसे है-२। फिर सत् वाला कैसे हुआ। सत् वाला तो सत् ही देखता है पर उनको कुछ बोलना नहीं है। बाहर दृश्य जो चल रहा है वो ठीक है। बाहर दृश्य Change नहीं करता पर अंदर अपने को ही Change में रखो। जो सत् है उसका आदर्मी

Contd. 3.

अभाव करके अहंकार करता है कि ये मैंने किया-२। क्यों नहीं बोलता है कि ये मैं ने नहीं किया, पर हो गया। सत् हो जाता है। अभी समझो हम कोई सेवा नहीं करते हैं तो उस रूप में सेवा होगी। ये जो संसार का चक्कर है ना वो चलेगा। कोई इसमें Part ले या न ले किसी की सेवा करे या ना करे, पर सब होगा, सब Automatically हो जाएगा।

प्रेमी : भगवान् ये बात अच्छी लगी कि सत् में ही आसक्ति रखें।

भगवान् : सत् में आसक्ति रखो, सत् में मोह भी रखो, सब ही रखो, सत् ही तुम्हारा लक्ष्य है, बाकी तो लक्ष्य ही नहीं है। बेगाना है वो, देह में कर्म कांड भक्ति करता है, द्वैत में, तो उनको जन्म ज़रूर गिलेगा। पर जो अद्वैत में रहते हैं वो अहंकार में कुछ भी नहीं करते हैं, जे सेवा देते हैं तो Hanḍīḍ की तरह करते हैं। एक लेखक है हमने उसको बोला कि गीता में लिखा है कि सत् का अभाव किया है, एक ही अक्षर तुम सबने सत् का अभाव किया है, असत् का भाव किया है। उसने बोला कि ऐसा लिखा है कि मैंने सत् का अभाव किया है असत् को पकड़के बैठा हूं, वो फिर गीता देखता है कि गीता में ये लिखा है दो अध्याय में! सच में कोई गीता पढ़े तो एक-२ अक्षर पढ़े तो मज़ा आता है, पर पढ़ते कितना है। सत् का अभाव पढ़ते ही नहीं है, वो फिर उस बात को चलाये कि सत् माना क्या? उसको क्यों विसरें? असत् को पकड़के बैठे हैं, माना माया को पकड़के बैठा है। उसकी बात मेरे से करेगा तो क्या बात करेगा? मैं एक ही अक्षर बताते हैं कि सत् का भाव किया है कभी? तो Right बोलता है ना कि सत् का अभाव क्यों किया? असत् को क्यों पकड़के बैठे हैं? मैं सबको ये बात बोलते हैं कि जे सत् का अभाव नहीं करो तो बात ही खत्म हो जाएगी, लेन देन ही खत्म हो जाएगी।

प्रेमी : सत् आपने ही पकड़ाया है और सबने कर्म व्यंवहार पक्का कराया है, पर फिर भी कभी कभी Slip हो जाते हैं।

भगवान् : वो बात दूसरी है। पर सच्ची बात कौन सी है? सत् का भाव करना। किसने सत् का भाव किया है? मैं बैठे हैं ना, कोई बोले कि मैंने सत् का भाव किया है। व्यंवहार - जगत्, तू - मैं, सब कुछ है पर उसमे ज्ञान ठहरता नहीं है। तू फिर बोलते हैं सब, तो सब माना क्या, सबने वो

ही बात किया है, पर मैं बोलते हैं किसने सत् का भाव किया है और असत् का अभाव किया है? ये ज्ञान जो है ना वो Detail नहीं करनी है, उसमें ले बाई नहीं करनी है, उसमें है कि ये सत् है या नहीं है? ये शरीर सत् थोड़ी है, उसमें बात है, उसमें ही द्वैत है जो उसको ही विसार दियो तो फिर सत् ही सत् है। आप सत् किये सब सत्, परमात्मा सत् है, सब सत् ही किया है। फिर तुम क्या बोलेंगे? बहुत बातें करते हैं ज्ञान की बाद विवाद करते हैं पर मेरे को अच्छा नहीं लगता है बाद विवाद। पर मैं बोलते हैं Total बताओ कि सत् का भाव तुमने किया है-असत् को पकड़के बैठे हैं, उसमें ज्ञान कैसे ठहरेगा।

प्रेमी : सत् है बराबर चौतरफ पर मन बाहर निकलकर चला जाता है?

भगवान : बाहर निकलकर किधर जाता है। मैं बोलते हैं बाहर जाता है तो भली जाए पर किधर जाता है? अंदर बाहर एको जाने, दूजा भाव न होवे।

प्रेमी : सत् बाहर अंदर कैसे है?

भगवान : इंधर अंदर कौन है ये बाहर कौन है? तुम्हारे में कौन है? दूसरे कौन है? सत् ही तो है। हम असत् शरीर को पकड़के बैठे हैं। असत् दुनिया को पकड़के बैठे हैं तो किसको किसको पकड़के बैठे हैं, विचार करना है। बहुत Deep में सत् है पर सत् कोई जगत् थोड़ी है। जगत् तो Change-able है। उसको हम सत्ता कैसे दें, मतलब ही नहीं है।

प्रेमी : भगवान आपने अभी बताया Detail में नहीं जाना है।

भगवान : समझो मैंने तो ज्ञान बताया और मैंने तो किया खलास कि सत् का अभाव नहीं करो। अभी ये detail कितनी करेंगे। बेटा ऐसा है, बेटी ऐसी है, जगत् ऐसा है, माया ऐसी है, फलाणा ऐसा है।

प्रेमी : अभी बताया कि और deep विचार करो, तो वो deep विचार क्या है?

भगवान : ये ही विचार है ना कि सत् को पकड़ो तुम बातें पकड़के बैठे हैं।

प्रेमी : भगवान असत् की बातों में, देह की बातों में हम सत् को भूल गए हैं।

भगवान : पत्ता नहीं क्या करते हैं मेरे को तो समझ में नहीं आता है, तुम्हारी बोली मेरे को समझ में नहीं आती है, सत्तको हम विसारते हैं और असत् को हम बिठाते हैं।

Contd. 5.

प्रेमी : ऐसा क्यों बोलते हैं कि ज्ञानी की एक दृष्टि अनंत युगों से भी ज्यादा कीमती है?

भगवान् : जैसे मैंने बोलो सत् का अभाव नहीं करो तो कौन तुमको बोलेगा कि सत् का अभाव नहीं करो, वो टिकेला है, तो वो तुमको भी टिकाने की कोशिश करता है कि तुम सत् में टिको और जो वो टिकेला ना होये तो वो तुमको बहुत बात बतायेगा, बेटा ऐसा, बेटी ऐसी, जगत् ऐसा है। अभी detail करने की मेरे को क्या ज़रूरत है। ये सब विषिष्ट में लिखा पड़ा है detail उसमें लिखी पड़ी है, इस तो बताएँगे Main फिर तुम जाके देखो।

प्रेमी : लगता है सत् का अभाव ना करें, स्वभाव संस्कार रुकावटें डालता है।

भगवान् : वो भली रुकावट डाले, पर तू अपना झंडा पकड़के रख तू ना हिल।

प्रेमी : ऐसा कौन सा रास्ता पकड़ें जो सत् याद रहे, बाकी सब बातें छोटी लगें?

भगवान् : वो तो ज्ञान है, सत् का भाव करो। अपने आप सब तुम्हारे पास आएगा, पर तुम मांगोगे नहीं कि मेरे को मिले।

अ०म

ओम सत्तगुरु प्रसाद
'ज्ञान में लीनता होवे'

[51]

जो भी सत्संग में जाते हैं तुम, चाहे छोटे में, तुमको कैसे उठने का मन होता है सत्संग से। सुनते हैं तो लीनता आना चाहिए या नहीं? जिधर हैं उधर ही एक रस हो जाएं। धरती से धरती हो जाएं, पर तुम बीच से उठते कैसे हैं? ये मेरे को बताओ। रात को खाली हमने भजन बोला तो जो दो-चार आपस में बैठे थे, उठने का मन ही नहीं था उनका। इतना Viabration था, इतनी शांति थी, इतनी लीनता तो हम उठें कैसे? उठने का मन ही नहीं था, पर खाने का Time, ये Time, वो Time इसीलिए Busy हो जाते हैं; पर रात को तो मैं हैरान हो गए। सब बिल्कुल एक रस थे। जो बैठे थे गुम हो गए। मैं बोलते हैं तुम जिधर भी सत्संग सुनते हैं उधर क्यों नहीं लीनता आती है। जिधर भी बैठो धरती से धरती हो जाओ। सत्संग माना क्या? सत् का संग। ऐसा सत्संग करो जो उठने का बिल्कुल मन ना करे। रात को ऐसे सब लीनता में आ गए। कोई भजन में ऐसा रस होता है जो आदमी जीता ही नहीं रहता है। सत्संग छोटा होवे या बड़ा होवे, हम तो अपने साथ बैठेंगे ना। वाणी उसकी सुनेंगे पर हम भी अपना उमंग पूरा करके उधर ही लीनता करेंगे कि आज ये भजन बोलो, ये वाणी बोलो जिधर भी सत्संग सुनेगा, ऐसी लीनता आ जाये, जो मन उठने को न बोले, कि उठो। भले छोटे सत्संग में जाओ, वाणी के दो वचन सुनें जो मेरे से लगे, इससे अधिक देखें ही नहीं कि इसने क्या बात किया, उसने क्या बात किया, पर जो वचन हमको दिल में लगा तो हम उठाके आ जायें। अगर मेरे को भी उमंग है तो जोश से मैं भी भजन बोलूँ। जिसमें सबको लीनता आये, लीनता करो ना। सत्संग में तुम ही करो, पर तुम्हारे मन में है उठना-२, भागना-२, ये कोई ज्ञान थोड़ी है, सारी उम्र हमने सत्संग किया है पर सारा Time लीनता में बैठते हैं, रात को अगर मैं लीनता में नहीं बैठते तो जो सामने बैठे थे वो लीन कहाँ होते थे। एक सुई जितना उठने की दिल नहीं थी। मेरे को तो सब मूर्ख लगते हैं जो लीनता में नहीं आते हैं। भले दो वचन भी सुनै पर उनमें गुम हो जाएं, फिर अन्दर ही हाजिमा हो जाए। ठीक हो जाए। पर जे लीनता नहीं है तो सत्तरांग भी नहीं है। जो उधर सत्तरांग गैं लीनता नहीं है तो मैं

Contd.2.

खुद लीनता जगायेगा। तो क्या होगा। लीनता के सिवाय ज्ञान होगा ही नहीं अन्दर। तुम ही बताओ।

प्रेमी : लीनता में लगेगा कि आपसे अन्दर ही मिलं पड़े हैं।

भगवान् : हम बोलते हैं जहाँ भी बैठो चाहे जंगल में बैठो तो भी लीनता आना चाहिए। तन मन एक रस स्मिरण कहिए सोये, स्मिरण कहिए सोये..। ऐसा स्मिरण करना चाहिए, ऐसा सत्संग करना चाहिए जो हमको उठने का बिल्कुल भन ना होते, हमने Life ऐसे गुज़ारी है। लीनता के सिवाय हमको मज़ा नहीं आता है। चाहे हम सुनें, चाहे हम सुनायें, अभी देखो सब शांत बैठे हैं ना, एक शादमी का भी जे मन उठने का करे तो बाजू धाले को विक्षेप आयेगा कि इसके मन में तो खाली जाना-२ लगा पड़ा है। बहुत सत्संग में चाहिए शौंक-इश्क चाहिए। जे इश्क नहीं है अंदर में तो सत्संग में आना बेकार है, अंदर में इश्क पैदा करो, ऐसा भजन बोलो, ऐसी ताणी बोलो, ऐसी बात करां जो आगेवाले को शौंक हो जाएगा कि ये कितना अच्छा है, किसको गुम करना चाहिए। चैतन्य महाप्रभू था, उसको राग प्रभू से लगा तो वो जिसको हाथ लगाए वो भी नशे में आ जाये-२, जो मैं बोलता है कि तुम जिधर भी बैठो सबको गुम करो। हम एक दफा विजरेश्वरी में गए तो जो माली की Wife थी वो हमारे से ज्ञान सुनने लगी और प्यार करने लगी, फिर हमने भी उसको प्यार किया मतलब है कि ये शरीर जहाँ भी बैठता था तो लीनता के सिवाय नहीं बैठता था।

प्रेमी : ये बात अच्छी लगी कि इश्क और शौंक होना चाहिए, जिससे लीन हो जायें।

भगवान् : हम बोलते हैं कि सत्संग में हमको मैला करना चाहिए, खुद भी जाके और ऐसा भजन बतायें जो वो लीन हो जायें, नहीं तो नहीं जाना चाहिए। रुखा सत्संग हमको नहीं चाहिए। प्रेम के सिवाय कुछ भी नहीं है दुनिया में।

प्रेमी : हमारे में अभी तक अज्ञान है, इसीलिए लीनता नहीं आती है।

भगवान् : अज्ञान भली धूङ पाए, पर तू अपनी होशियारी करके उसको मार, अज्ञान को मारने के लिए ज्ञान है, प्रेम है, शौंक है, इश्क है। इश्क के सिताय अंकल भी आयेगी नहीं! तुम्हारे में इश्क है ही नहीं। हमने तो

शुरू से ही इश्क पैदा किया है कि इस ज्ञान में इश्क नहीं है तो कुछ भी नहीं है। ये भजन है हमारे पास "जिनखे इश्कु नाहे तिनखे कतल करायां, पहिंजीअ..।" इनको कितना सिखाएँगे, मूर्खों को, बिल्कुल मूर्ख है। नहीं तो हमको कोई बताए कि हमको सब सत्संग में लीनता आती है।

ओम

प्रेमी : भगवान् एक दृष्टांत है दो आदमी आपस में रात को मिले, वाहालाम दिला, सुबह को उठके एक बोलता है कि रात सुखदायी हुई, क्यों कि सत्संग वार्ता हुई, दूसरा बोलता है कि दुखदायी हुई क्यों कि हमने भगवान् का स्मिरण किया नहीं। भगवान् प्रश्न है कि भगवान् स्मिरण करना या सत्संग वार्ता करना, दोनों आदमियों को अलग-२ वीचार क्यों हुआ?

भगवान् : देखो ना, वो दोनों एक नहीं हुए तो उसको लगा ही नहीं कि मैं ने कोई सत्संग किया पर जो दोनों एक होते थे तो सत्संग हो जाता था। इसीलिए मेरे को आता है कि ये सब निश्चय कराये, किससे भी मिलें, जिसकी भी ज्ञान सुनायें तो निश्चय ही कराये उसको, निश्चय में उसको जानता आयेगी। निश्चय नहीं होगा तो बाकी ऐसे ही फिजूल दो आदमी बात करेंगी, क्योंकि आदमी बोलता है कि हम घर में ज्ञान की बात करते हैं, सत्संग की बात करते हैं तो मैं बोलते हैं कि कौनसा सत्संग करते हैं, तुम ही बोलो जिभी ये लोग घर में आपस में बोलते हैं तो क्या सत्संग करते हैं, वो भी लो दो आदमी थे दृष्टांत में वो आपस में Fit नहीं हुए, ऐसे ही सत्संग किया जिसने सुनाया उसको मज़ा नहीं आया।

हनेशा जभी बरसात होती थी शरणागति में तो इतना पानी होता था, हम बोलते थे कि आज तो वो आयेगा जिसकी मेरे पास अमानत है तो सचमुच एक योगी आ ही जाता था। हमने ये मज़ा देखा है ना, जो एक से एक-२ ज्ञान होता, तो उसको मज़ा आ जाता है पर जे एक से एक सत्संग नहीं हुआ तो अठसंग होगा तो सत्संग कहाँ हुआ। तू अपने से ही पूछ तुम किससे सत्संग करो पर तुमने ऐसी बात किया जो तुमको भी तृप्ति आये, उनको भी तृप्ति आये। तुम्हारी बात से उसको मज़ा नहीं आया। हनेशा जभी बात करो तो तुम्हारी बात से उसको मज़ा आये, उसकी बात से तुमको लगे कि कितना अच्छा सवाल इसने पूछा। अभी समझा सत्संग किसको बोलते हैं।

प्रेमी : निश्चय पक्का हुआ है पर सत्संग में बैठके वृति कभी-२ भागती है?

भगवान् : वृति का जो ज्ञान है ना तो वो रोज वृति तू बनायेगा, रोज Down होगी, पर जो निश्चय करेगा तो निश्चय से ही चलेगा।

प्रेमी : भगवान्, अपने बताया कि एक निश्चय करने का ही काम गुरु ने दिया है, वो भी हम नहीं पक्का करते हैं?

भगवान् : ये ही बात मेरे को आती है कि ये सब जो आते हैं तो ज्ञान-२ क्या, पर निश्चय बुद्धि होना चाहिए कि आत्मा के सिवाय, गुरु के सिवाय, ज्ञान के सिवाय कुछ भी नहीं है, ये है निश्चय।

प्रेमी : जैसे ही निश्चय हो जाता है तो अंदर ही अंदर शांति आ जाती है।

भगवान् : जिन्होंने मेहनत किया है उनको निश्चय है। जिन्होंने मेहनत नहीं किया है उनको निश्चय नहीं है। आज तक भी लीला-२ करते हैं।

प्रेमी : एक ही बार निश्चय होता है या पुरुषार्थ से पक्का होता जाता है।

भगवान् : एक वारी अभी निश्चय है तो कोई भी मेरे को हिलाके दिखाये, बस निश्चय ही है, पर हम थोड़ी बोलते हैं कि मैं आत्मा हूं, या भगवान् हूं। ये कोई शब्द हम अपने को नहीं देते हैं।

प्रेमी : सत्त्वंग में बात चली कि अवतार का कोई निश्चय नहीं होता है?

भगवान् : हमने ये बोला कि उनको याद ही है अपना आप। ये सब अपना आप है। चाहे मैं पेड़ हूं, चाहे मैं पौधा हूं, चाहे मैं चंद्रमा हूं या मैं तारा हूं पर पक्का है कि ये सब मैं हूं, मेरे को चिंतन नहीं करना पड़ता है, याद नहीं करना पड़ता है। निश्चय रोज़ नहीं करना पड़ता है, एक वारी आके पक्का करके देखें कि मैं देह से, मन से, बुद्धि से उपर हूं तो फिर निश्चय हो गया।

प्रेमी : निश्चय करना पड़ता है या आपे ही हो जाता है।

भगवान् : ऐसी संगत में बैठे हैं ना, तो संगत से हो जाता है। अभी समझो कोई नया आता है, आज पुराना है तो अभी क्या किया, पहले क्या किया, हरेक 'का है ना संस्कार तो उनको इधर का ज्ञान अच्छा लगता है। लगता है इधर हमको शांती भिलेगी। हम तो कुछ करते नहीं हैं उनको,

Contd. 3.

हम तो कुछ बोलते भी नहीं हैं, पर उनकी भावना जो है वो अपना काम करती है और मेरी भावना मेरा काम करती है।

प्रेमी : भगवान आप रोज़ बताते हैं कि निश्चय कराओ?

भगवान : मतलब है कि लम्बी चौड़ी कथा ना करो, वो लम्बी चौड़ी Detail नहीं बतानी चाहिए। माया जगत् सम्बन्धी धूङ छाई, पर सीधा बताना चाहिएं जैसे कृष्ण पहले ही बोलता है कि हे अर्जुन तू अर्जुन ही नहीं है, फिर मैं कौन हूं, जभी अर्जुन नहीं है तो वो पीछे भगवान से सवाल करेगा कि मैं कौन हूं, मैं क्या हूं, बस ये बात है ना, शास्त्र में कौनसी बात है। मैं कौन हूं, मैं कहाँ से आया हूं, मैं कहाँ जाऊंगा। तम्हारे में आना जाना है नहीं तो कहाँ जाएगा। ये ज़ारूरी है कि हम अपने को जाने कि मैं कौन हूं। ऐसे पक्का नहीं है कि इसने जाना। भली वो बोले भी पर जब तक वो दूसरे को ना जगाये तब तक नहीं जाना। जो देख दिखाये, देखे पर दिखाए, खाली मैं आत्मा हूं तो मैं खुश हो गया, मैं नहीं खुश हुआ। वो कौन सी पक्क है जो मेरे को पक्का है जभी एक-२ जाके किधर बात करेगा तो वो बोलेगा कि तुमने किधर सुना है।

प्रेमी : कल वाणी में दृष्टांत चला उस में भक्त ने बोला कि हमने भगवान का स्मिरण नहीं किया हमने एक दूसरे को प्रसन्न नहीं किया? कैसे मालूम पड़े कि हमने प्रसन्न किया?

भगवान : कोई भी बात करते हैं भक्त तो बोलते हैं कि भगवान का ही स्मिरण किया। कोई भी बात करे क्यों कि भगत है ना, चोर नहीं है तुम क्यों एतराज़ करते हैं। कल हमने ये बोला ना कि एक दूसरे को प्रसन्न करें। उसने भी बात किया, उसने भी बात किया। दोनों ने ज्ञान लिया दिया। बात खत्म।

ओम

ओम सत्तगुरु प्रसाद
'आत्म निश्चय वाला ज्ञानी है'

[53]

प्रेमी : भगवान् ज्ञान में ध्यान समाधि, नियम क्या होना चाहिए, हमको अपने में?

भगवान् : तू बताओ, ज्ञान के बाद कौन सा संकल्प बचता है तो मैं समाधि करूँ? समाधि लगाने से क्या होता है? ख्यालों से खाली हो गया पर तू ज्ञानी हुआ? भली खाली ख्याल से हो जाओ पर ज्ञानी नहीं हुआ।

प्रेमी : भगवान्, कौन ज्ञानी हुआ?

भगवान् : ज्ञानी वो है जो उपर चढ़ा कि मैं सब से आगे आत्मा हूँ, I am before God was. भगवान् से भी पहले हूँ, ये निश्चय हो जाता है। मैं बोलते हैं कि ध्यान नहीं करो, समाधि नहीं करो, समाधि तो करें पर उसमें क्या बैठके सोचेंगे, अपना सुख मिलेगा कि मैं तो बहुत शांत हूँ, मेरे को संकल्प नहीं है। अपना सुख मिलेगा समाधि में, चाहे ध्यान में, पर ज्ञान में है अंदर की Improvement अपना जीवन सफल करना है, नहीं तो जीवन कैसे सफल होगा। तुम को कोई खराब करे कि तुम ध्यान समाधि नहीं करते हैं, तो वो बताओ तुम अपनी बात करो कि तुम हिलेंगे।

प्रेमी : आपने अभी कहा कि ख्यालों से कोई खाली हुआ तो वो ज्ञानी नहीं है, जब तक वो आत्मा उन्नति ना करे?

भगवान् : आत्म उन्नति करे ना, उसमें ज्ञानी का सवाल नहीं है। ज्ञानी वो है जो कामनाओं का, ख्यालों का नाश करता है, नहीं तो ज्ञान का है।

प्रेमी : भगवान्, पहले ख्यालों से खाली होगा, फिर I am before God was.

भगवान् : क्या भी करे, भली ख्यालों से खाली होवे पर ज्ञान अंदर का निश्चय है, तो अंदर के निश्चय को हमको डोलायमान नहीं करना है।

भली बाहर क्या भी होवे।

प्रेमी : वाणी में आया संकल्प विकल्प शांत हो जाना ज्ञान नहीं है, पर आत्मा का निश्चय करना ही ज्ञान है। पर संकल्प विकल्प रहित होना ही तो ज्ञान है।

भगवान् : संकल्प अच्छा भी आता है या नहीं, संकल्प मैं तेरे लिए करें,

Contd.2.

कोई भी क्यों कि प्यार है तेरे से पर विकल्प मैं किस के लिए करूं तो मेरी बात नहीं है। संकल्प है पर विकल्प नहीं है। आत्मा तो है ही है। आत्मा को मैं याद नहीं करते हैं, वो तो प्राप्त है। प्राप्त को तू अप्राप्त माने। सब आत्मा को भूल गए हैं। अप्राप्त समझके बैठे हैं, क्यों न हम प्राप्त समझें।

प्रेमी : भगवान प्राप्त करने के लिए संकल्प विकल्प से रहित होना ही काफी है?

भगवान : नहीं, इतना क्यों है, अशोक रहना है, मोह रो रहति रहना है, बहुत बातें हैं। अशोक रहना कितनी बड़ी बात है। भली हमारा बेटा मरे या बाप मरे, अशोक। शोक किसी बात का नहीं!

प्रेमी : भगवान, विकल्प का अभाव होगा तो ही आत्मा की शक्ति प्रकट होगी?

भगवान : मैं ने बोला ना विकल्प क्यों करें? संकल्प करें तुम्हारी भलाई के लिए, ताकी विकल्प क्यों करें?

प्रेमी : भगवान वाणी में आया कि Thoughtless के आगे आत्मा में स्थित होना है, वो कैसे ?

भगवान : संसार की प्रलय करो। संसार को लेकर बक ना करो, माना मन में संसार की प्रलय करो और आत्मा की पक्क करो। प्रलय नहीं करेगा तो संसार की चीज़ें, संसार के आदमी याद आएंगे। उनकी प्रलय करके बैठो, बोलो बना ही नहीं है।

ओम

ओम सतगुरु प्रसाद
 'क्रोध ऐ वाणी'

[54]

प्रेमी : बात बात पर क्रोध आता है?

भगवान : सामने वाले को दिल नहीं है? जिस के उपर क्रोध करता है, खाली तुमको दिल है, क्रोध करने का। तुम वह बात करो जो वो सह संके। घर में सब बोलेंगे चुप करो अभी जानवर आ गया है। गुस्सा करेगा तो तुम जानवार जैसा काटेगा क्या? उन लोगों ने तुम्हारा क्या बिगारा है, जो तुम गुस्सा करेगा? वह देखना चाहिए ना कि मेरा किसी ने कुछ बिगारा ही नहीं है और मैं क्रोध करूँ, यह क्या बात है? क्यों कि घरवालों को Weak करके उन के ऊचर तुम राज्य करना चाहते हैं और क्या? सब आदमी ऐसे ही है। घर में आया जैसे शेर आया, क्रोध में तुम किसको भी जीत नहीं पाएगा। क्रोध निकले ही नहीं ऐसे गदी पर बैठे हैं जिधर मैं निकलती ही नहीं है। क्रोध आएगा तो मुफ्त में थोड़ी आएगा, ज़रूर तुम्हारी इच्छा पूरी होती नहीं होगी जो तू अपनी Energy खराब करेगा। क्रोध में आदमी अपनी Energy खराब करता है, कर्म बनाता है। बहुत नुकसान है। क्रोध जो है न हमारे में ज़हर देता है। बाहर भी ज़हर अन्दर भी ज़हर। Emotion किस पर क्यों करें? सब को Free छोड़ दो। क्रोध आता है, तो तुम्हारी मर्जी पर कौन चले? क्यों न हम धीरज से बात करें, उस को समझायें, उस को बताए सब।

प्रेमी : अपने स्वरूप में कैसे टिकें?

भगवान : किसी के दिल को इतना भी ठेस नहीं लगाना है। दिल का शीशा तोड़ते हैं जब क्रोध आता है और हम दूसरे पर क्रोध करते हैं वो जुड़ेगा नहीं पहले जैसा फिर।

प्रेमी : घर में क्रोध पर काबू नहीं पा सकते?

भगवान : चाहे तुम्हारे से कोई छोटा होवे तो भी तुम उसके उपर नम्रता करो तभी तुम उस को जीतेगा। पर मैं उस को गुस्सा करेगा तो अहंकार से बात किया तो वो तुम्हारा दुश्मन हो जाएगा।

प्रेमी : भगवान क्रोध से तो किसी को बोलते हैं, वो नहीं बोलना चाहिए?

भगवान : कौन सा नेरे को हक है, जो मैं क्रोध करूँ? प्रेम करें तो ठीक है

Contd.2.

किसी को। Weak करना किसी को मेरा धर्म नहीं। क्रोध दूसरे का मास खाना है, दूसरे का खून सुखाना है। तू किसके उपर क्रोध करेगा? तू अपने को क्या समझेगा? उसी Time अहंकार आ जाएगा। चाहे बड़ी सास होवे तो भी बहू को बच्चे जैसा देखे, पर यह नहीं कि मेरी बहू है। तुम उस पे गरम होते हैं कि ऐसा होता है(2)?

प्रेमी : भगवान् क्रोध पर काबू पाने का अभ्यास करता हूं।

मणिवान् : जिस घर में तू रहता है, खाता है, सोता है, उस पर क्रोध करने का क्या मतलब है?

ओम

TUESDAY

ओम सत्तगुरु प्रसाद

13-08-96

'अमृताम्बर वाणी'

(55)

तुम किसको मज़ाक में कोई भी शब्द बोलते हैं कि "तू ऐसा है" तो उसको अच्छा लगेगा? तुम किससे इज्जत से बात करेंगे तो तुमको भी इज्जत भिलेगी। एक शब्द भी बोलो तो विचार से। हमारी गाली में भी मतलब है। हमारे पास इधर जो भी योगी बैठे हैं वो तपस्या में पक्के हैं - यह ज्ञान फकीरी का है, तुम पाण अमीरी करते हैं हमारे ज्ञान से, यह पक्का समझना। जितना सुख पहले नहीं लेते हैं (थे) - वैराग किसको भी नहीं है। पाण अब जाश्नि सुख लेते हैं - घूमना, फिरना, खाना, पीना, ये खाली खुशी करते हैं, बोलते हैं भगवान मेरा प्रसाद करना। प्रसाद माना क्या? Plate बनाएँगे, पैसा खर्चेंगे, ज्यास्ती पैसा है, वो खर्च करेंगे, ये है प्रसाद। तुमको खाली ज्ञान देने का है कि "मेरे गुरु का ज्ञान क्या है" पर Society नहीं बनाने की है। जितना कोई बात करे उतना उसको जवाब दो, ज्यास्ती उससे क्यों बोलें? क्या हम नहीं जाते, आते, घूमते हैं? जितना वो शब्द बोलते हैं, उतना बताते हैं। जब हमको नहीं बोलना होता है, तो दूसरी तरफ मुँह करते हैं, वो भाग जाते हैं, वो समझ जाते हैं कि भगवान की Mood नहीं है बात करने की। मैं जाश्नी क्यों बोलें? यह कोई ज्ञान नहीं है जो हम इधर उधर जायें, आयें, खाएँ, पीएँ, ये क्या बात हैं?

सत्संग वो करे जो पक्का होवे, देह अध्यास जिसका चला जाये। हमारे पास सालों के साल भी कोई रहता है, वह इच्छा रखता है कि कुर्सी पर बैठे, हम बोलते हैं जब तक तुमको देह अध्यास है, तो हम नहीं कुर्सी पर बिठायेंगे। देह अध्यास में तुम किसको क्या बनायेंगे? तुम भी खुद उपर नीचे होते हैं, तो उनको क्या सुनाएँगे? पहले हमको देह अध्यास पूरा मिटाने का है। देह अध्यास घरवाले कितना मिटाते हैं? हमारी लड़कियाँ अभी निर्वन्धन हैं, जो घरवाले मरे जीये, वो कुछ बोलते ही नहीं हैं। इतना Freedom तुमको है? जो वो बोले कि हमारे घर में मौत है तुम नहीं आना, हम आपे ही उठायेंगे।

सत्संगियों में भी ज्यास्ती मज़ा लेते हैं - खाना, पीना, भजन, कीर्तन, मनोरंजन सब है, क्या नहीं है? पर जो वैराग है, वो दूसरी बात है, वैराग कठिन तुमको लगेगा।

Contd.2.

प्रेमी : सबसे प्यार कैसे होवे

भगवान : सब कौन है, जिससे प्यार होवे? पहले तो तू अपने को जान कि तू कौन है, प्यार करनेवाला? तू ने अपने को मिटाया किधर है जो तू प्यार करेगा? अपने को मिटाते हैं तभी प्यार होता है, अगर हम अपने को ना मिटाये तो प्यार होता ही नहीं है। जल्दी नहीं है कि मैं किसको खिलायें, पिलायें, सुलाएँ, वह बस प्यार हो गया। प्यार है अपने को गँवाना, तो आकर्षण होगा। जो वो दो वचन के लिए खाली गोरे पास आए। अपने आप को कोई मिटाता नहीं है, जहाँ प्यार है। तुम्हारे को किसमे मोह होगा तो तुम प्यार कैसे करेगा? Free नहीं है मोह वाला। पर कोई थोड़ा रास्ते पर आता है तो हम बोलते हैं—"ठीक है"! कोई साकार भक्त है, कोई निराकार भक्त है। साकार भक्त है जुगनू की तरह, कभी भक्ति करेगा, कभी नहीं करेगा। कभी प्यार करेगा, कभी नहीं करेगा। और निराकार भक्त है लगातार सबको अपना समझेगा। तुम यह नहीं बोलो कि "मेरा सबसे प्यार होवे"- प्यार होवे यह नहीं, पर तू किससे रागद्वैष नहीं करो। बस यह ही तुम्हारा Play है कि तुम राग-द्वैष नहीं करो। तुम शांति में रहो, राग-द्वैष करेंगे तो तुम्हारे अंदर शांति नहीं आयेगी। ना किसी से दोस्ती, ना किसी से वैर। रागद्वैष है नहीं, समता में हम रहेंगे, तो प्यार करने, ना करने का सवाल ही नहीं होता। जो सामने आयेगा, जैसा तुम्हारा Nature होगा, वैसा तू करेगा Nature से। अभी अंदर कुछ गया है, तो वो निकलता है ना। तुम्हारे अंदर भी जो जाएगा वो निकलेगा। तुम इसी Time Artificial प्यार करेंगे तो उनको पाण शंका आयेगी कि यह माई Artificial प्यार करती है।

प्रेमी : भगवान आप आशिष करो।

भगवान : मैंने सबके उपर आशिष किया है, खाली तुम अपने उपर कृपा करो कि रागद्वैष किसी से ना करो, और एक भी गलत शब्द किसी से बात नहीं करो। ये बात है जो सब रहणी में होवे। न अज्ञायज मज़ाक होवे, ना अज्ञायज बात होवे, ना अज्ञायज Time Waste करे। अभी मज़ाक करेंगे तो Waste of time - समय गँवाया ना? क्यों मज़ाक किया? मज़ाक करो पर ज्ञान में करो ना, जो उसको ज्ञान मिले। मज़ाक करके खुद ही

Contd.3.

[3]

हम भावी बनाते हैं। और वह फिर कभी सुधरेगा नहीं, जो वह ब्रह्मज्ञान में बैठे, वैराग में बैठे? मज़ाकी आदमी कभी भी वैराग नहीं लेगा, खुशीर में रहेगा। ये ज्ञान कोई एक हफ्ता सुने तो सुना सकता है, इतना ज्ञान सरल हम देते हैं जो वह सुनके तोता बन सकता है। एकदम कॉय कॉय जाके करेगा, हँस थोड़ी बनेगा, जो पानी छोड़ के दूध पीए। वो कौचे जैसे कॉय कॉय

करेगा और तुम बोलेंगे "इसने तो बहुत अच्छी वाणी चलाई, बहुत अच्छा भजन बोला" पर तुम रहणी नहीं देखेंगे कि उनकी रहणी कौन सी है?

प्रेमी : भगवान मन कभीर इधर उधर चला जाता है।

भगवान : सारी दुनिया में जो प्रिय में प्रिय चीज़ है वह मेरे को है, फिर मैं कहाँ भी दुनिया में बैठेगा तो अँगारा लगेगा। कहाँ भी बात करेगा अँगारा लगेगा कि मेरे को प्रिय में प्रिय चीज़ कौनसी है? अँगारा लगेगा तो कहाँ भी बैठ नहीं पाएंगे, बकबक नहीं करेंगे, परचिंतन नहीं करेंगे, कहाँ भी Time नहीं गँवाएँगे। कोई कितना हमको प्यार करें हम दूसरे दरवाजे से निकल आयेंगे, Life में हमने ऐसा नहीं किया है। - Time Waste करना, पराया खाना खाया, हम तो पानी भी किसी के घर में नहीं पीते थे। अकेला भी पका कर खायेंगे, पर दूसरे का नहीं खाएँगे। क्या ज़रूरत है? Waste of Time है - नहीं अच्छा लगता है। जो क्या जिज्ञासु है उसमें वैराग होना चाहिये कि "क्या बात है?" हँसी मज़ाक क्या करना चाहिये?

प्रेमी : भगवान लगता है इतनी Life गँवाई है।

भगवान : सबने ऐसा किया है। ज्ञान से पहले Life क्या थी? बस जनावरों जैसा खाना, पीना सोना।

प्रेमी : भगवान, कभीर खुशी में आ जाते हैं - Balance में नहीं रहते हैं।

भगवान : वो ही हम सिखाते हैं - Balance, अपने उपर Balance होवे -

कहाँ हमको हँसना है, कहाँ हमको गुरसा करना है। सब दिकार हमारे

Under होवे - हम Use करें ना करें, जैसे कोई हथियार होता है, वो

Under होवे - हम Use करने का है। कोई हथियार कैसे, कोई कैसे Use

सारा Time थोड़ी Use करने का है।

Contd.4.

करते हैं। ऐसे ही हमारे पास सब ज्ञान है पर हम किस Time किसके आगे क्या बात करें? मौन करके विचार करो कि बात करके क्या हुआ? Time Waste हुआ - Time is money, More than money माया से जाश्ती Time है। Time नहीं मिलेगा फिर। जो Time गँवाएँगे, वो वापिस नहीं मिलेगा। Time की महिमा समझो कि Time कैसे Use करना चाहिए? समझो मेरे को अपना सुख है- तो मैं दूसरे को सुख नहीं दे सकेंगे, वह यह बात है।

जभी हम दूसरे को अपना सुख देवें तो अपना सुख खारा ही नहीं लगता है। यह ज्ञान इतना निष्क्राम है जो देना रीछा लेना नहीं।

प्रेमी : भगवान्, गुरु के सिवा कोई खुजान नहीं करेगा।

भगवान् : सारी दुनिया आजमाओ। मैं आजमाऊ, नाई बहन बेटा, सब आजमाओ। एक भजन सिद्धि में है- "दिठो मुं चल उठ सैसार गुरु साण"। मतलब के साथी सभी, मतलब जा प्यार।

प्रेमी : भगवान्, यह समझ में आता है कि सब मतलब के साथी हैं।

भगवान् : सूक्ष्म में तुमको वासना है। तुमको हमने यह बात समझाई है पर किसने नहीं समझा है। समझो तुमने बेटे की मेरे से शिकायत किया, तो मतलब है इसीलिए तो किया ना। तो उनको दो ना, जो उनको चाहिए। मतलब वाले का मतलब पूरा करे, पर तुम तो निर्वासनिक होके रहो ना।

प्रेमी : भगवान्, आशिष करो।

भगवान् : इसमें आशिष की कौनसी बात है। ये अपने उपर ही कृपा करके तुम जाँचो। हम शाँति करके बैठें- न पराया है, न अपना है। सब एक ही परमात्मा का रूप है, तभी प्यार है। पर अगर भाई से अलग, भाई से अलग- एक सत्संगी से ज्यादा, एक से कमती, तो क्यों? कोई बाह्य तुमसे करेगा, चुगली करेगा, तो वो तुम्हारा दोस्त हो गया, जिससे तुम बकंबक करेंगे, तो वो तुमको लटकायेगा। तुम भी उनसे लटकेंगे, यह है एक दूसरे को लटकाना। झूठी बात आपस में करेंगे, परंचितन के सिवाय दोस्त हो नहीं सकता, नहीं तो किस लिए दोस्त है? दोस्त से क्या किया है Life में तुमने? तुम मेरी बात चुप करके बैठ के अंदर देखो। दोस्त कैसे

Contd.5.

बना, कहाँ से आया- इतना Time हमको सत्संग में आये हुए हुआ है, न हमारी कोई सहेली है, न सत्संगियानी है। हमने बात ही नहीं किया है, तो सहेली कहाँ से आई? सत्संगियानी है तो भी अपने घर में सुखी है। ना मेरे को इच्छा है मिलने की, ना उनको, बाकी प्यार है। कोई मेरे को खेंचे तो मैं उसकी ओँख निकालेंगे। अभी हम बाहिर जाते हैं तो कभी नहीं कोई Telephone आएगा कि "मैं मरता हूँ, आप मेरे लिये आओ"। हम तो तुम्हारे साथ है, हमने तो तुमको अमर बनाया है, तो तुम मरते कभी हैं? कोई हमको बुला सकता है कि तुम इधर आओ, इधर आओ, क्यों कि हमने उनसे बात ही नहीं किया है ऐसी, जो वो समझे कि इस उस Time उसके पास नहीं है, जो आयेंगे। किस Time नहीं है किसके साथ? किसको हमने इन्तजार में रखा ही नहीं है- प्रेम में रखा है, लगन में रखा है, अगन में रखा है। तुमने मेरे को याद किया माना तुमने मेरी Body को याद किया, तो वो गलत है। जितना तुमने मेरा ज्ञान सुना है, उसको Apply करो बस। कितना ना अच्छा होगा जो हम ज्ञान अपने से लगाएँगे और देह, नामरूप इधर नहीं रखेंगे। कोई न मेरा नाम बोले, ना मैं बोलूँ। एक सत्संगियानी बीमार हुई घरवाले बोले कि भगवान को बुलायें, वो बोली "भगवान मेरे पास नहीं है क्या, जो वो आएगा?" फिर घरवालों ने बाला "किताब छपाएँगे, उसमें नाम डालेंगे"। उसने बोला "नाम तो वो (भगवान) डालेंगे नहीं" कीर्ति कौन कराएगा, तो चींटी आ जाएगी। तुम ज्यास्ति किसको सुनायेंगे तो वो मेरे पास आ जाएंगे, हमको चींटियाँ नहीं चाहिये, जिज्ञासु चाहिये।

प्रेमी : भगवान, कैसे मालूम पड़े कि हम ज्ञान सही उठा रहे हैं?

भगवान : रागद्वैष नहीं है, मोह समता नहीं है, इच्छा वासना है ही नहीं, समता है। जो रागद्वैष करे, वो जिज्ञासू नहीं है।

ओम

प्रेमी : भगवान्, आप बोलते हैं Digestion Power होना चाहिए हमारे में, इसको खोलिए।

भगवान् : हमको खाना हजाम न होवे तो डाक्टर को दिखायें कि नहीं? ऐसे ही हमको अगर Digestion नहीं होती है जब हमको कोई शब्द बोलता है, Insult करता है, कुछ भी करता है, उस Time हम भगवान्(सत्तगुरु) को याद करके बोलें कि उनको गाली मिली होगी या ऐसे ही भगवान् बन गये। उन्होंने Digestion किया होगा न? इतनी दुनिया की गाली सब खाया है न, तो हमको कुछ लगता नहीं है। ये कौन सा Digestion है? जो ये हम न खाएँ तो हम Strong भी न होवे। ऐसे ही चलेंगे लड़की होके, औरत होके। पर जे हमको कुछ बनने का है तो हमको Strong होने का है, जो सब हाज़मा हो जाए। अरे ऐसी कौनसी नई बात है? हमारे दादा भगवान् कभी गाली देते थे तो वो बोलते थे, देखो कि हम इतनी गाली क्यों देते हैं, क्यों कि तुम्हारे घर में तुम्हारा मर्द बोलेगा ना कि तूं ऐसी कैसे है, तो तू बोलेगी कि दादा भगवान् ने पहले ही पत्थर कर दिया, पहले ही आदत डाल दिया है तो अभी लगता ही नहीं है।

प्रेमी : भगवान्, कल आपने वाणी में बताया कि अगर Digestion Power रखेंगे तो Balance में रहेंगे, नहीं तो हमारा Ordinary होकर रहना आप को अच्छा नहीं लगता है।

भगवान् : किसको भी अच्छा नहीं लगता है। जो हमारे मुख से नया जन्म लेता है तो वो नीचे नहीं आता है, ना नीचे की बात करता है। गिरता है तो मेरे को अच्छा नहीं लगता है। हम बोलते हैं कि जो इधर से निश्चय करे वो कभी भूलता नहीं, भूलने वाला ही नहीं है।

प्रेमी : भगवान्, ये बात अच्छी लगी कि Digestion Power बढ़ाने के लिए सिर्फ आपको आगे रखे कि आपने कितना Digest किया होगा।

भगवान् : उसके सिवाय कुछ होता थोड़ी है। सहनशक्ति किससे बढ़ेगी? समता भाव किससे बढ़ेगा? सहनशक्ति और समता भाव हमारा धर्म है। समझो मैं इसको दो गाली दियूँ तो ये जाके बोलेगा कि देखो भगवान् ने

क्या बोला? ऐसे बोले कि ये मेरी उन्नति के लिए है, ये मेरे लिए सबक है। या तुम इस उससे निन्दा करें। कोई सहन नहीं करता है। हम अभी इसको बोलते हैं Get Out तो ये बोलेंगा कि भगवान ने मेरे को निकाल दिया। ये नहीं बोलेगा कि देह अध्यास से निकाल दिया, नहीं तो ये देह में पढ़ा है।

प्रेमी : भगवान शक्ति दीजिए Digest करने की।

भगवान : शक्ति तेरे अन्दर है, हरेक के अन्दर है, Use करेगा तो है पर अगर बोलेगा कि मैं ऐसा हूं, मैं गरीब हूं, मैं निर्बल हूं, ऐसे नहीं, लेकिन निश्चय में रहें।

प्रेमी : भगवान अन्दर Computer में जो याद है वो भूले कैसे बाहर से तो Digest भी कर लेते हैं।

भगवान : ये अभ्यास की बात है कि पहले वाली जिन्दगी क्या थी? ये अभी समझो ये लोग कल्पना का भगवान करते थे, तो Life थी? अभी ज्ञान से Life हो गयी है न। ऐसे तू भी मन को बोल कि पहले वाली Life क्या थी? समझो आज भी ज्ञान न होता तो क्या होता-संसार। जैसे बन्दर बन्दरी चलती है, ऐसे तुम चलते थी। अभी तुमको ज्ञान है, विवेक विचार है। है न, तभी चलते हैं।

प्रेमी : भगवान आप का आर्दश है तभी Digest कर सकते हैं।

भगवान : जोकर किसका आदर्श न देखें तो आगे बढ़ ही न सकें। किताबों से नहीं बढ़ेंगे। किसको भी देखेंगे कि इसमें सहन शक्ति है, धीरज है, समता है, प्रेम है, तो फिर बढ़ सकेंगे। जैसे तुमने देखा इनको शान्ति है तो तुम्हारे में भी शान्ति आएगी। इनमें धीरज है तो तुम्हारे में भी धीरज आ जाएगा, देखा आर्दश तो वैसा तुम भी हो जाएगा।

प्रेमी : भगवान अपने को Dissolve करना है।

भगवान : Digestion करना है, Dissolve तो करना है पर Digestion भी करना है। अभी तू खाना खाएगा, Digest करेगा, तभी दूसरे Time खाएगा न। जो बातें संसार की हैं वो हमको अपने में Dissolve करनी हैं, हज़म करनी हैं, हाज़ारों के साथ हम देखेंगे कि सब ठीक है। कोई Wrong नहीं देखेंगे।

प्रेमी : भगवान सत्संग में बात चली कि तुमको ज्ञान के लिए शाँक है, प्यार भी करते हैं पर पाचन शक्ति जो है वो Weak है, भगवान इसको खोलिए।

भगवान : देखो कई लोग समझ कर बैठे हैं कि खाली हमको भगवान चाहिए पर वासना जभी न होवे ना पीछे कुछ भी न होवे, तू रीस करके बोलेगा कि मैंने ये छोड़ा(3) पीछे मन तुमको बोलेगा कि ये तुमको छोड़ने की क्या ज़रूरत है, फिर तुम्हारा Digestion खराब होगा।

प्रेमी : भगवान वासना है इसीलिए Digestion नहीं है, आपने कांटा Right पकड़ा है।

भगवान : नहीं तू लम्बी बात नहीं कर कि यह सब छोड़, इधर रहके भी निवासना होके रहो, कम जास्ती बात न करो। बच्चों में रखेगा तू मन, रिवाज़ी बातों में, तो तुम्हारा मन खराब हो जाएगा। हमेशा Control में रखो। बच्चों की दिल इतनी है तो हम छोटीर बातें उनसे ना करें।

ओम

प्रेमी : भगवान Born Great अपने को कैसे Feel करें?

भगवान : तीन शरीर है - स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर, Unconscious, इसको जाननेवाला आत्मा है। जो जन्म लेकर जीव आत्मा आया, वो Wrong कर्म कराता है। जो सच में आत्मा है, Pure है, उससे कर्म होता ही नहीं है, जब Unconscious तुम्हारा खत्म होगा, जो भी तुम्हारा संस्कार है, मन, बुद्धि चित, अहंकार है। जो भी Conscious में घुटन आती है, कभी प्यार आता है, कभी दुख आता है, कभी हालत आती है, वो जभी इतना ज्ञान आएगा तो सारा Unconscious खत्म हो जाएगा। फिर आदमी अपने को New समझेगा कि मैं Born Great हूँ। मैं आत्मा, भगवान्, निराकार, Invisible हूँ। मैंने संकल्प किया तो मैं एक से अनेक हो जाऊँ। One became many। अभी ये तम्हें नहीं लगेगा, तू माँ का बेटा है, औरत का आदमी है। अभी तू देह में है, देह से संसार देखेगा। जब देह का Ego जायेगा, तब तू अन्दर आत्मा को जानेगा, जागेगा। अन्दर जागे, तभी ज्ञान से अन्दर जायेगा।

ज्ञान से पहले मनुष्य जन्म की कदर कौन जानता था, अभी कदर जानी है। ज्ञान से इधर सब का कैसा जन्म हो गया है जो अपने को Born Great समझने लगे हैं। कोई समझते हैं माँ बाप से आया हूँ, कोई समझते हैं कर्म से आया हूँ, कोई कहता है निराकार से ही साकार होकर आया हूँ, मैं Born Great हूँ। द्विय जन्म, द्विय कर्म। Some are born great, some achieve greatness and some have greatness trust upon them. किसका ऐसा संस्कार है जो मेहनत भी ना करे और पार हो जाये। आगे जन्म में थे इकरारी, आज भगवान ने आकर इकरार पूरा किया।

एक सामान्य सत्ता है, एक विशेष। सामान्य तो सब में है, जैसे लकड़ी में आग, पर विशेष तब जब उसमें आग प्रकट होये। ऐसे ही सामान्य आत्मा सब में है पर विशेष तभी है जब ज्ञान की तीली लगे तो सबको रोशनी आयेगी। अज्ञान का पर्दा हट जाये। ज्ञान अन्जन गुरु दिया ...। जैसे मैं आकाश से आया हूँ, धरती से नहीं। I am Born Great।

Contd.2.

यह गल्ती है, हम अपने को Sex Born समझें। मैं रुद्यभव हूं। रुद्य से आया हूं। जैसा तुमने चाहा, भगवान् ने किया तो वैसा जन्म मिलता है। प्रेम करो भले, पर व्यंवहार जगत नहीं देखो। कर्ता Doer ना बनो। आत्मा अकर्ता है। मैं निराकार से साकार हो गये हैं, पैदा होने वाला नहीं। तुम Born Great किसको बोलेगा? गुरमूर्ति नाम जपे इक बार। एक बार गुरु के मुख से नाम लिया तो सब पक्का करें।

प्रेमी : भगवान् ये समझ में आया कि Born Great होकर रहना है, Sex Born नहीं।

भगवान् : Born Great तो पहले ही दिन समझना है, लगके बाद ही Life है। जन्मने को Sex Born क्यों समझें? मॉ एक तिनका भी नहीं बना सकती है। पता नहीं मॉ बाप किसको बोलते हैं? वो तो भगवान् ने ऐसे ही रखा है जौसे खम्भे से नरसिंह अवतार निकल आया। पहले मन पैसे का, फलाणे का आधार रखता था, Not भगवान् का जौसे भगवान् ने गर्भ में रक्षा किया तो वो आज भी रंगा, कल भी करेगा। किसी भी रूप में भगवान् आएगा, मैं पहचानूं। भगवान् पहेला देता है Life में, यह हुआ क्यों? ऐसा हुआ तो क्यों? हमारी सारी Life राज से भरी पड़ी है। मैंने जैसा समझा, मैं नहीं हूं, पर सब राज है। सब का अनुभव है। अनुभव का ज्ञान उज्ज्जावलता की वाणी..। तुमने ज़ंजीरों से खुद को बँधा है जो मरने तक एक दूसरे से छुटकारा नहीं है। तुम सब Sex में विश्वास करके बोलते हैं, "मैं Sex Born हूं"। क्यों कहते हैं। Christ को बोला Marry ने शादी नहीं किया है तो Virgin (कुंवारी) ही रही। तुमको दिखाते हैं Born Great कैसे आते हैं? पहेली तुम बूझो न बूझो, तुम तो एक दूसरे के बंधन में रहते हैं। Christ किसके बंधन में है, Marry किसके बंधन में है, कृष्ण भगवान् किसके बंधन में है। तुमको पैगम्बर के वचनों को पूरा ध्यान देना चाहिये कि क्या वाक्य बोलते हैं? क्या सिखाते हैं? तुम समझा सामने देखते हैं तब कि भगवान् को सब घरवाले भगवान् ही करके देखते हैं। तो कब कैसे हुआ? जभी भगवान् ने जगत को इतना पीछे किया तभी तो भगवान् देखते हैं। चमदृष्टि से समदृष्टि कैसे होती है -हाज़िर मिसाल है। उनकी रँहनी सहनी कैसी है जो Born Great हैं, उंची आत्मा है, निश्चय

Contd.3.

आत्मा है, तो सबके हृदय में हूं। तुम अभी है। तुम बोल सकता है 'मैं सब के हृदय में विराजमान हूं', चाहे ज्ञान से, चाहे अज्ञान में। भगवान् सब बताते रहते हैं, मतलब तू मेरा नाम नहीं भूल सकता है। मैं सबके हृदय में घुस सकते हैं, तुम क्यों नहीं? क्यों कि तुम सूक्ष्म नहीं हो, मच्छर से भी सूक्ष्म। प्रेम समता आपे ही काम करती है। जो चिन्तन मनन करता है तो परमात्मा उसके हृदय में है।

प्रेमी : भगवान् Born Great होने के लिये गुरु मुख से जन्म लेना ज़रूरी है?

भगवान् : गुरु रोज़ जन्म देता है, गुरु तो बोलता है तू Born Great है। तू क्यों अपने को Sex Born समझता है? Sex Born में ज़ाहर ही होगा। अमृत तब होगा जब गुरु का ज्ञान पियो। गुरु ज्ञान हम पीते जायें, पर जभी हम व्यवहार में लटके हैं तो कुछ नहीं होगा। किनारा करना है कि इससे भी क्या? इन सब में तृप्ति आई? Peace of Mind है? अगर मेरा किसी से व्यंवहार नहीं, शब्द नहीं, मैं अपने स्वयंगतम में ही हूं, सजातीय- विजातीय एक ही है। स्वागत माना अपने को जानो, अपने मन को, इंद्रियों को जानो, मैं कौन हूं? क्या हूं? तो तुम्हारा देह अध्यास चला जायेगा। अभी ये दृश्य को धारण करनेवाला कौन है? ये रंग रूप किसने धारण किया? पुरुष ने प्रकृति का रूप धारण करके दे दिया है।

प्रेमी : भगवान् वाणी में था हर समय कर्म एक पूजा है, जैसे अपने लिये ही कर रहा हूं, ये कैसे समझे?

भगवान् : आज मेरे को आया एक है Born Great, जिसमें जन्म से ही संस्कार ऐसे हैं जो जल्दी पैगम्बर बन जाते हैं, दूसरा पुरुषार्थ से बनते हैं, तीसरे जो है उनको गुरु बनाते हैं। इसीलिए जो भी इधर आते हैं उन पर दया आती है, ये नरक से बचे, ८४ के चक्कर से बचे। जो सच की बात अंदर पड़े, कम से कम ज्ञान का अनुभव संनेंगे तो हैरान हो जायेंगे, गरीब को गरीबी, साहूकार को साहूकारी नहीं लगती, सब प्रारब्ध में खुश हैं। यहाँ मैं सबको पूरार सुनते हैं, मेरे को यह शौंक है, मैं एकर के दिल को सुनूं, जानूं, पहचानूं कि ये कैसी हालत में है। चाहने पर भी दुनिया में कोई किसी की मदद नहीं करता। हम तो रोज जायेंगे, ये मेरे पास आये

आत्मा है, तो सबके हृदय में हूं। तुम अभी है। तुम बोल सकता है 'मैं सब के हृदय में विराजमान हूं', चाहे ज्ञान से, चाहे अज्ञान में। भगवान् र सब बताते रहते हैं, मतलब तू मेरा नाम नहीं भूल सकता है। दूसरे को उठाते हैं। यह एक निष्काम का बीज ब्रह्मज्ञान का ऐसा डाला है जो पूरा Garden बन गया है।

प्रेमी : भगवान आप Born Great हैं, और निश्चय करते हैं जो तू है सो मैं हूं।

भगवान : हमारे में क्या हैं? जो भगवान तुम्हारे में है सो मेरे में है। तुम सब ज्ञान ध्यान न देखो। सत् में जाओ, जो तू है सो में हूं। पाण जो तुम्हारे पास है वो तुम Utilise नहीं करते हैं।

प्रेमी : भगवान् लगता है आप Born Great हैं।

भगवान : Born Great सब है, पर विचलित बुद्धि नहीं करनी चाहिए। तुम्हारी विचलित बुद्धि है। पर तुम संसार की बात बंद करो। गूँगा ज्ञान सुनाये बहरे को, पिंगला पर्वत पर चढ़ा, अंधा देखकर बहुत खुश हुआ, मतलब गूँगा कौन है, जो सिवाय अपने बात नहीं करता है, ना सुनता है, ना बोलता है। जो दुनिया का कोई शब्द नहीं सुनता, मत भतांतर नहीं सुनता, वह बहरा है। और जो पिंगला है उसका इंद्रियों का रस छूट गया है, सो वह चढ़ जाता है जल्दी। जो संसार को इन आँखों से नहीं देखता है वो भगवान को देखकर खुश होता है। गूँगा ज्ञान क्या, तुम बहरा भी नहीं है। सब करता है - पढ़ना, लिखना, शास्त्र क्या नहीं चलेगा। जो हमारे पास योगी आए हैं, इस तरह से आए हैं जो गुरु बोलता है उसपर सत् करके चलते हैं। और शास्त्र पर ध्यान नहीं देते हैं। शास्त्र तो है शास्त्र, शास्त्र चलाना कौन सीखाएगा? जब कोई भी बात मन में लाता है तो आत्मा का घात करता है। घड़ी इक विसर्ग...। तुम भूल जाते हैं। पर जो सीधा Line पकड़कर चलेगा तो मंजिल पर चलेगा। ये ज्ञान सीधी Line वाले के लिए है। अगर कोई कर्म भक्ति, दया दान, तप करेगा तो रास्ता भूल जायेगा।

प्रेमी : भगवान् कर्म का कर्ता मन है, शरीर क्यों भोगता है?

भगवान् : तू है Sex Born जभी Born Great गुरु से बनो! Sex Born

कभी शुद्ध नहीं होगा। ये फिर विकारी है। तुम बोलो मैं Sex Born नहीं हूं, Born Great हूं, मन तुम्हारा नौकर बनकर चलेगा। देह में विकार होते हैं क्यों कि ये खिजली का मज़ा है, देह को होता है क्यों कि ये पैदा हुआ है, Sex Born है। और कोई Born Great होता है, तो तू विकारी होगा। जबी उनसे तू हटेगा तो काहेका मेरा बाप, काहे की मेरी माँ, मैं तो आदि से स्वयंभव हूं, अपने आप से प्रकट हुआ हूं। अपने रखय से इधर आया हूं। किसने मुझे पैदा करा है। जो माँ बाप ने पैदा किया है तो हम बोलेंगे एक और ऐसा पैदा करके दिखाए। तू जो आया है निमित मात्र एक खम्भा से जैसे नरसिंह भगवान खम्भे से आया। माँ के शंरीर में किसने रक्षा किया? किसने तुम्हें उधर दूध पिलाया? किसने संभाला, माँ बाप ने? माँ बाप ने क्या किया है जो तुम मर्यादा करते हैं। उन्होंने हमें लाया नक्कर्गम्भ में, वहाँ हम १० महिने नक्क में रहा। जिसने Born Great समझा, उसने संब भुला दिया, पर इनको भाँ बाप की आदत है कि मैं मर्यादा करूँ, ये करूँ, दुखी होऊँ।

कभी नहीं देह से विकार छोड़ना, यह भूत, भूत ही रहे, यह तो Sex Born है, इसे बाजू में रखो। तुम अंदर में सुजागी रखो कि मैं Born Great हूं, Sex Born नहीं। गुरु इसाँलए यह कहते हैं जो मैं इसके मुख से यह सुनूँ Born Great से यह सुनूँ कि मैं Born Great हूं। माँ बाप, भाई नहीं बोलेगा कि तू Born Great है, वो तुझे Sex Born मानेगा। जो देह अध्यात्मी है, उससे छुट्टी है, मेरी उनसे पटती नहीं है, तुम्हारी पटती है। कभी न कभी उनसे बात कर लेते हैं, मिल लेते हैं। हमारे को हमारे जैसा चाहिए, जो हमें सत् करके देखे और मैं कभी भी ज्योति से ज्योति देखूँ। इस Bodyमें सहेली संबंध न रखूँ। हमें कोई बोलता है, "मैं ज्ञान नहीं उठा संकता, पर आपसे मज़ा आता है, आप गेरी ममी है"। हम उंसी time get out कर देते हैं। कोई क्यों मुझे ममी बहन बनाये। हम जीव सृष्टि में आनेवाले नहीं हैं। जबी तुम Born Great को पहचानेंगे, मेरे को भगवान बोलते हैं पर Meaning नहीं है, तो सब Fail है।

'निर्वाण पद'

प्रेमी : भगवान निर्वाण पद कैसे प्राप्त हो।

भगवान : हम जो भी ज्ञान सुने तो अपने अन्दर के लिए सुने तो ना मैं रहूँ न मेरा रहे। Total अपने को खाली रखो कि मेरी Possession कुछ भी नहीं है। जो कुछ भी है सर्व के लिए है। ये Garden है, कोई थोड़े ही बोलता है मेरा है। तुम बोलेंगे Municipality का है, पर Municipality वाला थोड़े ही इधर आकर मज़ा लेता है। कोई खा रहा है, कोई खेल रहा है, कोई सत्संग कर रहा है, तो ये Garden भी देखो सब का है। ऐसे ही तम्हारा मर भी है, उसको मुराफ़िर खाना बना के रखो, उनको कहो कैसे भी धूमो, खाओ, नाचो, You are free.

प्रेमी : भगवान निर्वाण पद क्या है? वो शरीर शान्त होने के बाद मिलता है?

भगवान : निर्वाण पद है जहाँ वाणी न पहुंचे, जैसे जागृत, स्वप्न, सषोपति, तुरिया। जहाँ वाणी न पहुंचेगी, वाणी Stop हो जाएगी कि क्या सुनने का है? क्या करने का है? उसके दिमाग से वाणी भी नहीं चलती है, उसकी इच्छा भी नहीं है सुनने की। सुनना था वह सुन लिया। सुनके क्या सुनेंगे? क्या लिखेंगे? तुरिया पद है जहाँ स्थूल, सूक्ष्म, कारण खलास हो जाते हैं। निर्णय नहीं करते हैं, तभी वाणी सुनता है कि अभी क्या बचा। जब सभी सवाल का जवाब मिल गया, प्रश्न नहीं रहा, ओम भी नहीं रहा, तो पाया पद निर्वाण, पाये पद निर्वाण शान्ति सुख तू माण, मेरे मन शान्ति सुख तू माण। वाणी से उपर है आत्मा स्वतः सिद्ध आत्मा है, जैसे स्वतः सिद्ध अज्ञानी है। अज्ञानी बनने के लिए तुम ने क्या साधना किया तो ज्ञानी बनने के लिए दिखावा करते हो, न पाया न खोया। संशय निवृति करो तो परम आनन्द की प्राप्ति है। समझो कोई प्रश्न करे तो तुम मेरे से पूछने आयेगा क्या कि क्या जवाब है, यह तो मूर्खता है। तुमको विश्वास होगा तुम्हारे मुख से गुरु बोलेगा, जब गुरु में तेरा ध्यान होगा। तुम बताओ तुमने ज्ञान के लिए क्या साधना किया? ऐसे ही मैं Already जो हूँ सो हूँ, कोई माने न माने जैसे कपड़ा का टुकड़ा है पर तू उनको बोलता है Handky है तो जो है। तुम को अपने में विश्वास नहीं

Contd.2.

है, क्यूं कि अपना गधापन याद है, तो तुमने अपना गधापन क्यूं रखा है? मूर्ख क्यूं बना है? नीचपना क्यों रखा है? आत्मा प्राप्त है^{को लूँगा जावे।} प्राप्त को अप्राप्त माने। आत्मा....। मैं अपनी आत्मा तो निकालकर नहीं देगा, तिरी पर नहीं दिखाएगा। अनुभव तू करेगा, जैसे तेरी जुबान को आम के Taste का मालूम है, ऐसे यह ज्ञान अनुभव का है। तू खूद अनुभव कर, वह तेरा Master है। गुरु के अनुभव से तेरा मतलब नहीं। पर उसके अनुभव को अपनाना है। जो गुरु कर सकता है, वो मैं भी कर सकता हूं। तुम बताओ तुम क्या अभ्यास करते हैं? किस पर जाते हैं? लड़ाई में जाते हैं तो बहादुर की शक्ति सामने रखते हैं। गीता का इलोक भी पढ़ते हैं कि No death, जैसे वह Healthy होकर खड़ा रहे। लड़ाई में भी बहादुर का आदर्श रखते हैं, तो तू कौन सा आदर्श रखते हैं? तेरा मन भगवान मे है यह काफी नहीं है। तमको आदर्श देखना चाहिए कि ज्ञानी उठे कैसे? चले कैसे? तुम को शौंक होना चाहिए कि यह कर सकता है, तो मैं भी कर सकता हूं। वो निरइच्छा है तो मैं भी निरइच्छा हो सकता हूं। उसने सबको भुलाया है तो मैं भी भुला सकता हूं। मेरे को समझ में नहीं आता है तुम क्या करते हैं सारा दिन ज्ञान की बकर करते हैं, Waste of time, Waste of money. तुम मेरी बात समझते हैं या नहीं? मेरी बात तो सब प्रगट है, पर तुम कौन सा अभ्यास करते हैं। हमारा दादा अच्छे में अच्छी चीज़ सब को खिला देता था, बाकी जो बचा, खुद खा लेता था। तुम को खाने की इच्छा होगी तो तुम बोलेंगे मैं तो यह नहीं कर सकता हूं। पर अभी बोलो मैं सब कर सकता हूं। पहले लगता था प्रिय में प्रिय चीज़ कौन सी लगती है, वह इनको खिलाओ न। तुम्हारी वासना उस चीज़ से जाएगी नहीं, जब तक लुटाओगे नहीं। तुम बताओ तुम्हारी अजीब बात लगती है। राम रतन पड़ा बजार मे....। भगवान सबका है उसको कोई भी ले सकता है। ऐसे यह प्रेम भी हम लुटा सकते हैं। तुम सूने हैं क्या, क्या करते हैं?

प्रेमी : यह पद जीते जी प्राप्त होता है या मरने पर।

भगवान : तुम मेरे को क्या देखते हैं, जीते जी या बाद में। हमारे पास

कोई Book नहीं है पर बताएंगे ऐसे- ४ वेद- ६ शास्त्र पढ़े हैं। रब दा कि पाना, इथुं....। एक पौधा है वृक्ष के नीचे उसको धूप नहीं भिलती है, तो माली निकाल के दूसरी जगह लगाता है जहाँ उसे धूप पानी हवा सब मिले। ऐसे तू जो घर में फँस गया है तो उधर से निकल कर इधर दाव लगा। जैसे कबीर चोरी करके भी संतों को खिलाता था, उसे सन्त इतने प्यारे थे जो चोरी कर के भी खिलाया।

प्रेमी : भगवान इधर से उधर गुरु ही करेगा न।

भगवान : सब गुरु करेगा तो बाकी तू क्या करेगा? तू वासना में गया तो तू दुखी सुखी होता है न। पौधा तो जड़ है तू तो चेतन है। तू घर छोड़ इधर वैसे आया? तू चलता कैसे है? खाता कैसे है? पीता कैसे है? मरता कैसे है? जीता कैसे है? ज्ञानी स्वतः सिद्ध होता है। उधर से दुनिया को आजमाया, Friend को आजमाया, तो उधर से पटकर अब इधर लगाया। मेरी वासना किधर भी नहीं जाती है। मेरे को कुछ भासता नहीं है तुमको भासता है न। जो मेरी भावना है तो मेरा निश्चय है, उसपर चलते हैं।

प्रेमी : कोशिश करते हैं चलने की।

भगवान : कितना दादा करता था भक्तों का सब चोरी से खिला देता था। प्रिय से प्रिय चीज़ भक्तों को खिलाएगा, विधवा के आंसूं पोचेगा तो आज वो सब हँसती है। गुरु ने हम से क्या महनत किया जो खाना, पीना, हँसना सब सिखाया। तुम जीते कैसे हैं? प्यार न करे तो जीये क्यूँ? मरने के समय हम क्यूँ छोड़ें, Live Rich Die Poor। स्वतः सिद्ध आत्मा है तो तू ज्ञानी पहले ही था न। ज्ञानी साधना नहीं करते हैं पर उसने आजमाया कि बेटा क्या? रुग्नी क्या? धन क्या? What is What ?

ओम

'ओम सत्तगुरु प्रसाद'

- 1) जो ज्ञान में Fit है, वो ही Hit है।
- 2) किसी बात में Tention नहीं करो, पर Function करो।
- 3) अन्दर की Purity, मुक्ति की Surety है।
- 4) गुरु के वचन Catch करो, फिर Match करो।
- 5) कारण मैं हूं, तो निवारण भी मैं ही करूं।
- 6) कोई मुझे चिढ़ाता है, मैं चिढ़ता हूं या ज्ञान में चढ़ता हूं। चिढ़े नहीं आत्मा में चढ़े।
- 7) भगवत् को तकलीफ आयी तो उसने कहा:-
सत्तगुरु तुम पर बड़ा नाज़ है, पर समझ न पाऊं क्या राज़ है।
पहनाया आत्मा का ताज़ है, बजने लगा अन्दर का साज़ है।
अभी हाथ में तुम्हारे मेरी लाज़ है।
- 8) वचन ते हलूं, पर हिलूं न।
- 9) गुरु को मानते हैं पर गुरु की नहीं मानते हैं।
- 10) गुरु की Help, अपनी Self.
- 11) अहंकार है, तो अंधकार है।
- 12) अभिमान है, तो अपमान भी है।
- 13) विशालता में खुशाहालता आहे।
- 14) शारारत अपनी होती इै, शिकायत दूसरे की करते हैं।
- 15) मजबूर न बनो, मज़बूत बनो।
- 16) Order न करो, आदर्श रखो।
- 17) विक्षेप तभी आती है, जब भगवान् का रूप नहीं देखते।
- 18) मायूस मां तदहिं आहियां जदिहं मां Useful न आहियां।
- 19) दास भाव में रहें, खास भाव में न रहें।
- 20) हाय-हाय नहीं करो पर 'आहे-आहे'(परमात्मा) करो।

ओम

'स्थित प्रज्ञ के लक्षण - Balance में रहना'

प्रेमी : भगवान् आप दृश्य देखते भी हैं, सबकी बातें जानते भी हैं, फिर भी आप समानता का प्यार करते हैं।

भगवान् : जब तक मैंने स्थित प्रज्ञ का लक्षण धारण नहीं किया, तब तक मेरे को ज्ञान है नहीं। अज्ञानी की तरह आना जाना करेंगे। तुम ज्ञान सुनके अपना Balance नहीं रखते हैं कि मैं किधर जाता हूं, क्या सुनता हूं, क्या सीखता हूं, क्या जानता हूं। मेरे को क्या करना चाहिए वो किसको भी Balance नहीं है। मैं नहीं मानते हैं कि किसने स्थित प्रज्ञ के लक्षण धारण किये हैं? मैं क्या हूं, कौन हूं, मैं कैसे उठते हैं, कैसे बैठते हैं, कैसे खाते हैं।

प्रेमी : भगवान् ये ही पुरषार्थ रहता है कि जहाँ भी रहें, समता में रहें, Out नहीं होवें।

भगवान् : जभी होवे ना? वो तो शब्द है - समता भाव। मेरा शब्द मेरे को नहीं सुनाओ। तू अपनी वाणी बता कि इस पर मैंने Study किया है। ऐसे ज्ञान नहीं होता है, जैसे तुमने ज्ञान लिया है। ना तू अपने को ज्ञानी समझेगा, न अज्ञानी समझेगा, तो तू क्या है? राजा जनक जभी अष्टावक्र के पास गया तो गुरु ने समझा ये अज्ञानी नहीं है क्यों कि ये मेरी शरण में आया है। ज्ञानी भी नहीं है क्यों कि संशय युक्त है। मूर्ख भी नहीं है, क्यों कि गुरु को झुकता है। बाकी वो जिज्ञासु हैं तो बैठकर प्रश्न उत्तर मेरे से करे। ये हमको Balance में रहना है कि कितना ज्ञान समझा है, भगवान् को कितना जाना है और कैसे जाना है। अगर तुम्हारे में स्थित प्रज्ञ का लक्षण ही नहीं है तो तुमने मेरे को जाना ही नहीं है, जरा भी नहीं जाना। माना रोलू होकर आना जाना करेंगे। २० साल गुज़र जाएंगे तो भी ज्ञानी तू न होगा। हम सब को बोलते हैं - स्थित प्रज्ञ का लक्षण धारण करो। कौन सी बात तुमको हलचल करती है, तू कौन है? तुम्हारे को सब जानें, मेरे को सब जान गए हैं या नहीं जाना है? खाली तुम नहीं परं जो व्यंवहारी है, परमार्थी है, चाहे सत्संगी है सबने जाना है। अभी व्यंवहारी आदमी मेरे ऊपर टीका रख सकता है? जगत् का आदमी मेरे को बुला सकता है? क्यों कि वो राब जान गए हैं कि मैं एक तरफ हूं! तुम

Contd.2.

एक तरफ ये रखेगा(संसार), दूसरी तरफ परमार्थ रखेगा, हम एक भी नहीं रखेंगे। हमको कोई बुलायेगा, हम नहीं जाएंगे, तुम जाएंगे। तुम्हारे उपर कोई भी हक रखेगा कि तुम आकर सम्माल करो, हमारे उपर कोई नहीं हक रखेगा। तो हमको क्यों नहीं बोलेंगे? जैसे चक्र होता है उस चक्र से निकल कर हम दृष्टा हो जाए हैं। अभी तुम सब चक्कर में है। जिसने भी Balance नहीं रखा है - कि मैं स्थित प्रज्ञ का लक्षण धारण करूँगा, ज्ञानी क्या होता है? वो तुमको सारी दुनिया जाने। ये हमारे गुरु की बात है। आज की बात नहीं है। तुम को ये Balance नहीं है। मैं आज Balance की बात करते हैं कि तुमको कोई पहचानें कि तू निरइच्छा है। खाली निरइच्छा, और बात तो दूर है। कोई इच्छा नहीं है, कौन सी इच्छा करें? हमारा कुछ है ही नहीं, तो हम Sign कौन सी करें? जब तक तुमको स्थित प्रज्ञ का लक्षण नहीं है, तब तक तुम्हारा ज्ञान डालडा है। Balance जल्द रखने का है, Balance के सिवाय ज्ञान नहीं आएगा। कोई भी बोले मैं ने ये व्रत धारण किया है, ये नहीं किया है।

प्रेमी : भगवान् हमको लगता है कि हम अपनी View जल्दी बता देते हैं, पर आपके सामने कोई आता है तो आप स्थिर रहते हैं, शब्द नहीं देते हैं।

भगवान् : ये तो तुम स्थित प्रज्ञ का लक्षण नहीं बताते हैं, पर अपना अनुभव बताते हैं। मैं बोलते हैं तुमने कौन सा व्रत धारण किया है, जिस पर तुमने अभ्यास किया है। हमारे मन में मैं और मेरा नहीं है, तभी हमको कोई नहीं बोल सकता है। वो ही बोलता है, जो भगवान् है, मेरा थोड़ी है। मेरी बात मेरे को नहीं बताओ, पर अपना अनुभव बताओ कि मैंने ज्ञान से अभी ये व्रत धारण किया है। वो व्रत फिर तोड़ना नहीं है, जो वचन गुरु निकाले वो पालन करें कि आज से मैं ये-२ नहीं करूँगा, तो वो वचन उसका हुआ पर जो वचन न पाले तो उसका वचन कैसे हुआ?

प्रेमी : ये निश्चय हो जाये ये कोशिश है।

भगवान् : मैं थोड़ी बोलते हैं नहीं हो। सब कोशिश में हैं अब तक। ऐसे इन सबके गुण खराब थोड़ी है। स्थित प्रज्ञ में कौन है? बात किया तो क्यूँ किया तो किससे और क्यों? कौन कर्म उनसे कराएगा? कोई करा ही नहीं

Contd. 3.

सकता है। वो नहीं करता है, तो उससे कोई करा नहीं सकता है। वो नहीं है झामेले में तो झामेले की बात ही नहीं करेगा।

प्रेमी : भगवान अकेले से न्यांरा कर दो।

भगवान : मैं जो बोलते हैं तुमने कौन सा व्रत धारण किया है, मैं एक ही बात पूछते हैं, तुम ज्ञान सुन कर तोते बन गए हैं, Lecture तुमको करना आ गया है पर स्थित प्रज्ञ का लक्षण कौन सा होता है, वो मेरे को बताओ। मैं बोलते हैं कोई व्रत धारण करता है तो उसको कोई Offer भी नहीं करता है। हमको कोई Offer नहीं करता है।

प्रेमी : भगवान लगता है बाहर की मौन आ गई है पर अन्दर की मौन पूरी नहीं आई है।

भगवान : मेरे को तो अन्दर की मौन चाहिए न। बाहर जो मौन करते हैं वो मूर्ख करते हैं कि अगर मैं कुछ बोलूँगा तो सामने वाले को अच्छा नहीं लगेगा। अन्दर की मौन है भगवान, बाहर की मौन मूर्ख करता है, बोलता है मेरी बात में कोई रस नहीं है, तो मैं क्या बात करूँ?

प्रेमी : भगवान सुबह अपने साथ बैठते हैं?

भगवान : ये तो मैं नहीं बोलते हैं, न मैं बैठते हैं न किससे बोलते हैं कि बैठो। ये तो २४ घण्टे का अभ्यास है। ये किसको खबर है कि सूक्ष्म में ख्याल चलता है, ऐसे थोड़ी है कि कोई बैठता है तो ख्यालों से खाली हो। तुमको व्यवहार पड़ा है अन्दर, जगत् पड़ा है, बाकी बाहर से बैठना बेकार है।

प्रेमी : भगवान मौत की Picture करते हैं पर बार-२ टूट जाती हैं।

भगवान : वो मौत थोड़े हुई। तू हल्का हुआ ना, काहे को बक-२ करता है। हरिद्वार में ऐसे साधू है उनको मना है कि किसी से हल्के हो कर बात नहीं करना। अगर करेंगे और उनके गुरु को खबर पड़ गई तो उनको आश्रम से निकाल देंगे कि क्यों व्यंवहारी लोगों से बात किया। माना उनको ये Balance है कि हल्की बात नहीं करने की है।

प्रेमी : भगवान बाहर की मौन मुख की मौन है।

भगवान : अगर मैं, मैं जगत् से निर्वाण में है तो मेरी अन्दर की मौन होगी। अगर सबसे मैंने निर्वाण पद किया तो मेरी मौन हो है, तो निर्वाण पद

किया तो मेरी वाणी भी नहीं, शब्द भी नहीं, द्वैत द्वेष भी नहीं, आना जाना भी नहीं है, Connection ही नहीं है और कोई Offer नहीं करेगा। एक तरफ समझो हम बेटे की शादी में गए और बहिन के बेटे की शादी में नहीं जाए तो वो बोलेंगे कि अपने बेटे की शादी में गए और मेरे बेटे की शादी में नहीं आए, ये क्या बात है? तो Guilty किया ना। गीता में लिखा पड़ा है स्थित प्रज्ञ का लक्षण। तुम बातें करके मेरे को बहलाते हैं पर ये डर नहीं है कि मैं

स्थित प्रज्ञ का लक्षण धारण कर्तुं तुमको जगत वाले सब पहचानते हैं, हमको नहीं जानते हैं, इधर कोई जगत वाला आता ही नहीं है। तुमको सब जानते हैं क्यों कि वासना तोड़ी नहीं है कि इनसे मेरा की(2)।

प्रेमी : भगवान लगता है अभी ज्ञान सुन के हम चुप हो गए हैं, शान्त हो गए हैं।

भगवान : ज्ञान सन के हम शान्त हैं पर उसमें अन्दर संकल्प विकल्प चलेंगे पर अगर रस्सी दूटी पड़ी है तो कौन सा संकल्प विकल्प आयेगा। वो भली जाये, कुछ भी करे, मेरा की? इसका मतलब इतना हम पहले ही त्यारी करे जो वो मेरे को पहचाने भी नहीं [पूरानी तरह से]। समझो कोई पड़ोसी आता है हमारे पास, हम पहले ही इतना ज्ञान बतायेंगे जो आगे भी नहीं आएगा, माना वो Power की बात है, Power रखेंगे तो कोई कुछ नहीं कह सकेगा।

प्रेमी : भगवान ये Power नहीं आता है।

भगवान : समझो आज बच्चे हैं, उनका दुख सुख है, पैसे का दुख सुख है तो सब खरीद करते हैं ना खुद ही। भगवान थोड़ी दुख देता है। मैं नहीं जानू, पर अपनी इच्छा वासना सब कर्म हमारे से कराती है।

प्रेमी : भगवान सुबह को संकल्प विकल्प उठते हैं।

भगवान : क्योंकि मगज में जगत पड़ा ही है, माना जगत सत् है, जगत है धुएँ का पहाड़, मिथ्या, पर जगत इनको सत् लगता है, जो इधर (अन्दर) बैठा ही है। मैं नहीं मानते हैं। अगर ये Balance नहीं हैं तो Balance टूट जाता है। वित ऐसा रखे जो तोड़े ही नहीं, कोई बोल भी न सके। Be Careful होकर रहो।

प्रेमी : भगवान अगर अन्दर Balance नहीं है, तो यह जाएगे।

भगवान : बस ये ही बात है। Balance नहीं है तो तुमको कोई भी गिरा देगा मिन्ट में।

प्रेमी : स्थित प्रज्ञ में टिक नहीं पाते हैं, टिकने का क्या साधन है।

भगवान : टिक नहीं पाते हैं, पर टिकना तो है ना। वो भी मैं इच्छा करके खाती हूँ, इच्छा करके धूगती हूँ, तो इश्वर इच्छा से चलें न। अपनी Will क्यों चलायें?

** तुम बाहर का नाम रूप देखते हैं, बाहर से कुछ नहीं मिलेगा, तुम इधर साकार भक्त होंगे जो आधार लेके बैठते हैं। पर नेष्ठा का आधार रखो कि मैं देखो कितना खाली हो गया हूँ। न मेरा देश है न वतन है। तू मैं जुदा नहीं एक हो है। प्रेम है सबसे पर Bank balance अपना पक्का है। जिसको Bank balance नहीं है, वो अपने को गरीब समझता है। आते है, खाते है, ऐसे ही तुम्हारा बाहर है कि भगवान है पर निश्चय की Bank balance नहीं है, कि मैं आत्म धन से शाहूकार का भी शाहूकार हूँ। तुम्हारे में Balance नहीं है, तू अपना Balance नहीं रखते हैं, मैं कौन हूँ, मैं क्या हूँ जो ज्ञान रखता है उसको माया की ज़रूरत नहीं है, तेरी रोजी तुझको ढूँडे।

** भगवान ने अच्छा दिमाग दिया है, पर हम संसार की लहरों में बह गए हैं। पानी में खड़े हैं तो लहर आएगी, संसार में खड़े हैं तो लहर आएगी, कर्म में खड़े हैं तो लहर आएगी, चुप तुमने नहीं किया है हमारे जैसी। लहर जब आती भी है तो तुम Face करते हैं। प्रकृति भी देखे कि ये पुरुष है ये सामना कर सकते हैं तो प्रकृति को भी चुप आ जाएगी। प्रकृति देखे मैं है पुरुष, Balance वाला पुरुष कोई भी कर्म Balance के सिवाय नहीं पूरा होगा।

** दुनिया अपना Balance हिलाती है, कभी Balance में रहती है, कभी फिर हिलते डुलते है, वो Balance नहीं है। दुनिया मेरी शक्ति कभी न देखे कि इनको कुछ हुआ भी है, मेरे चहरे से किसको मालूम भी न पड़े। देह का जो भी कर्म है वो देह का है, तुम प्रकृति में बह जाते हैं तो प्रकृति तुमको फिर हिलाएगी। यह प्रकृति का धर्म है अभी हवा है, पक्का

है, तुमको पौधों को नहीं हिलाएगी। सारे दिन में पता नहीं कितनी बार हिलाती होगी। ऐसे ही हवा की तरह प्रकृति हिलाती है। जभी हम Balance में होंगे तो देखेंगे प्रकृति मेरे को हाथ जोड़कर जाये, मैं क्यूं हाथ जोड़ूँ, माया मेरे को हाथ जोड़े। सारी दुनिया हिलाती है ये पक्का समझना। हमारे हिलने से कोई भी प्रकृति के लोग हमारे से उल्टा कायदा लेंगे। दुनिया में हम उम्मीद रखें कि ये मेरे को मदद करेगा तो हमने पुरुष परमात्मा की बैइज्जती किया।

** तुम्हें अपने निश्चय पर विश्वास है, तो वह विश्वास ही करामतों की करामत है। यह नहीं बोलो यह नहीं समझेगा, नहीं सुनेंगा। गुरु का वचन Law (कायदा) है। तुम्हारा वचन भी कायदा है। सामने वाला खुद देखेगा कि इसमें अभी Balance आ गया है। डीले डाले होके नहीं रहना, अपने सत् Power में पक्के रहो। तुम Power में पक्के होंगे तो कोई नहीं जीत सकेगा! हम उन्हें जीत सकते हैं वो हमें नहीं जीत सकेंगे।

** हम बोलते हैं मैं पूरन, तू अपूरन नहीं बनेगा। तुम्हारी हीन भावना मेरे को निकालनी है। तुम को अपना आत्मा विश्वास छुड़ाएगा, माया का साथ नहीं। तुम भले करोड़पति हो जाओ पर अधूरा रहेगा। ये ज्ञान पूरा Fit करता है। Balance, Full sponge, Full supong पूरा होके छोड़ देता है। हमने Life में देखा तो पूरा ज्ञान हुआ तो आनंद आया, फिर कुछ भासता ही नहीं है। हम बोलते थे कि ये क्या हो गया, न खुशी न रंज, न तू न मैं, न उंचा न नीचा, न हम न तुम।

प्रेमी : स्थित प्रज्ञ और ब्रह्मज्ञानी में अन्तर क्या है?

भगवान : वो मंजिल पर पहुंच गया है वो चल रहा है। अपना लक्ष्य बना रहा है, चल रहा है। ब्रह्मज्ञानी में तो चलना फिरना है ही नहीं, वो तो Seer है।

ओम

'मुक्ति'

प्रेमी : भगवान्, मुक्ति किसे बोलते हैं?

भगवान् : आज तुमको कुछ भी भासता है, लहर आती है तो किसको आती है, तिनका भी अगर लगता है और खून बहता है तो किसको भासता है, लहर आती है तो किसे आती है? कोई मनुष्य धक्का लगाए तो दोष देते हैं और अगर खुद धक्का खाकर टॉग तोड़कर आएं तो किसको दोष देंगे? जब तक मैं सर्वज्ञ नहीं हूं, तो मेरी Will खत्म होगी? ऐसे मैं ज्ञानी हूं, I Know.

प्रेमी : भगवान्, मुक्ति Nil नहीं है, इसे खोलिए।

भगवान् : अभी तू मुक्ति चाहता है, तो मुक्ति है सर्व दुखों की निवृत्ति परम आनन्द की प्राप्ति, उस में Nil का सवाल ही नहीं है।

ऐसा विचार करते हैं कि मेरा गुरु किस में राजी होगा, गुरु बोले हट जा तो एक सेकण्ड भी नहीं लगाओ। गुरु बोले आओ तो एक सेकण्ड भी नहीं लगाओ। बोले खड़े रहो तो खड़े रहो, ये है मुक्ति।

प्रेमी : भगवान्, संकल्प विकल्प से शान्त होना, इच्छाओं से खाली होना ही मुक्ति है क्या?

भगवान् : मेरे लिए संसार है ही नहीं। संसार होवे तो आएंगे संकल्प विकल्प पर है ही नहीं संसार, न अपना है न पराया। किसी दुख से डरते नहीं है, चाहे शरीर का हो या पराया या बाहर का, डर है ही नहीं, सब गुजार जाएगा।

छूटना अपने संकल्प से है, हम छूटते हैं बाहर के लोगों से। ऐसे बोलते हैं सुख नहीं देवे तो किसी को दुख क्यों दें? गुण न देखें तो विकार क्यों देखें? किसका भी Life में विकार देखेंगे तो द्वेष ही शुरू हो जाएगा। कोई भी इच्छा Life में नहीं करो तो खुशी ही खुशी है।

प्रेमी : आपने बताया हर एक पहले से ही मुक्त आत्मा है, पर हम तो मुक्ति चाहते हैं?

भगवान् : यह भी तुमने शब्द पकड़ा है, देह में चाहते हैं मुक्ति। जीतेजी मरते नहीं है, खाली साधना करते हैं। करना था सो कर लिया, देह मानुष की धर लिया। जो करना था नहीं करते हैं, खाली मुक्ति चाहते हैं। जन्म

है, तुमको पौधों को नहीं हिलाएगी। सारे दिन मैं पता नहीं कितनी बार हिलाती होगी। ऐसे ही हथा की तरह प्रकृति हिलाती है। जभी हम Balance में होंगे तो देखेंगे प्रकृति मेरे को हाथ जोड़कर जाये, मैं क्यूं हाथ जोड़ूँ, माया मेरे को हाथ जोड़े। सारी दुनिया हिलाती है ये पक्का समझना। हमारे हिलने से कोई भी प्रकृति के लोग हमारे से उल्टा कायदा लेंगे। दुनिया में हम उम्मीद रखें कि ये मेरे को मदद करेगा तो हमने पुरुष परमात्मा की बेइज्जती किया।

** तुम्हें अपने निश्चय पर विश्वास है, तो वह विश्वास ही करामतों की करामत है। यह नहीं बोलो यह नहीं समझेगा, नहीं सुनेंगा। गुरु का वचन Law (कायदा) है। तुम्हारा वचन भी कायदा है। सामने वाला खुद देखेगा कि इसमें अभी Balance आ गया है। डीले डाले होके नहीं रहना, अपने सत् Power में पक्के रहो। तुम Power में पक्के होंगे तो कोई नहीं जीत सकेगा। हम उन्हें जीत सकते हैं वो हमें नहीं जीत सकेंगे।

** हम बोलते हैं मैं पूरन, तू अपूरन नहीं बनेगा। तुम्हारी हीन भावना मेरे को निकालनी है। तुम को अपना आत्मा विश्वास छुड़ाएगा, माया का साथ नहीं। तुम भले करोड़पति हो जाओ पर अधूरा रहेगा। ये ज्ञान पूरा Fit करता है। Balance, Full sponge, Full supong पूरा होके छोड़ देता है। हमने Life में देखा तो पूरा ज्ञान हुआ तो आनन्द आया, फिर कुछ भासता ही नहीं है। हम बोलते थे कि ये क्या हो गया, न खुशी न रंज, न तू न मैं, न उंचा न नीचा, न हम न तुम।

प्रेमी : स्थित प्रज्ञ और ब्रह्मज्ञानी में अन्तर क्या है?

भगवान : वो मंजिल पर पहुंच गया है वो चल रहा है। अपना लक्ष्य बना रहा है, चल रहा है। ब्रह्मज्ञानी में तो चलना फिरना है इनी नहीं, वो तो Seer है।

ओम

प्रेमी : भगवान्, मुक्ति किसे बोलते हैं?

भगवान् : आज तुमको कुछ भी भासता है, लहर आती है तो किसको आती है, तिनका भी अगर लगता है और यहन बहता है तो किसको भासता है, लहर आती है तो किसे आर्ती है? कोई मनुष्य धक्का लगाए तो दाष देते हैं और अगर खुद धक्का खाकर टॉग तोड़कर आएं तो किसको दोष देंगे? जब तक मैं सर्वज्ञ नहीं हूं, तो मेरी Will खत्म होगी? ऐसे मैं जानी हूं, I Know.

प्रेमी : भगवान्, मुक्ति Nil नहीं है, इसे खोलिए।

भगवान् : अभी तू मुक्ति चाहता है, तो मुक्ति है सर्व दुखों की निवृति परम आनंद की प्राप्ति, उस में Nil का सवाल ही नहीं है।

ऐसा विचार करते हैं कि मेरा गुरु किस में राजी होगा, गुरु बोले हट जा तो एक सेकण्ड भी नहीं लगाओ। गुरु बोले आओ तो एक सेकण्ड भी नहीं लगाओ। बोले रहे रहो तो खड़े रहो, ये है मुक्ति।

भगवान् : भगवान्, संकल्प विकल्प से शान्त होना, इच्छाओं से खाली होना ही मुक्ति है क्या?

भगवान् : मेरे लिए संसार है ही नहीं। संसार होवे तो आएंगे संकल्प विकल्प पर है ही नहीं संसार, न अपना है न पराया। किसी दुख से डरते नहीं है, चाहे शरीर का हो या पराया या बाहर का, डर है ही नहीं, सब गुज़र जाएगा।

छूटना अपने संकल्प से है, हम छूटते हैं बाहर के लोगों से। ऐसे बोलते हैं सुख नहीं देवे तो किसी को दुख क्यों दें? गुण न देखें तो विकार क्यों देखें? किसका भी Life में विकार देखेंगे तो द्वेष ही शुरू हो जाएगा। कोई भी इच्छा Life में नहीं करो तो खुशी ही खुशी है।

प्रेमी : आपने बताया हर एक पहले से ही मुक्त आत्मा है, पर हम तो मुक्ति चाहते हैं?

भगवान् : यह भी तुमने शब्द पकड़ा है, देह में चाहते हैं मुक्ति। जीतेजी मरते नहीं है, खाली साधना करते हैं। करना था सो कर लिया, देह मानुष की धर लिया। जो करना था नहीं करते हैं, खाली मुक्ति चाहते हैं। जन्म

से ही आत्मा मुक्त है, बन्धन क्यों माना? अहंकार है तो बन्धन है। ऐसी माया है, जो बाहर से बोलेंगे कि मोह नहीं है पर अन्दर में रस पड़ा है। अपनी जांच करो अपने बेटे से क्या मिलेगा जो इससे नहीं मिलेगा। हमारे से पहले कितने गुरु के पास आए वो जीते भी हैं और सब हमारी इज्जत करते हैं तो क्यों? कहते हैं ये दादा ही है, क्यों कि हम गुरु के पैरों पर चलते हैं, तभी गुरु की इज्जत निकलती है। "नानिक ताके लागे पाइ"। ये अजब नहीं जो वो सब हमारे से पहले आए अब वो कहाँ गए? किधर गए? क्यों कि अन्दर में जो मोह ममता है, इच्छा वासना है वो नहीं छोड़ते। एक को देखकर दुखी, एक को देखकर खुश होते हैं, ये क्या बात है?

प्रेमी : भगवान्, ऐसा लगता है मुक्ति चाहिये और कुछ नहीं।

भगवान् : जे तुमको मुक्ति की चाह है तो छोटी चीज़ में मन जाएगा ही नहीं। तुच्छ चीज़ में रोना आएगा कि क्या लेते हैं। सारी होली गई, गुरु पूर्णीमा गई, हमारे पास एक फल भी नहीं आया, क्यों कि हम लेते ही नहीं हैं। क्या कर्तुं गुरु देव की भेंट...। तम बोलेंगे भगवान् तृप्त हैं, क्या देवें भगवान् को।

हमने एक योगी को पकड़ा कि तुमको गुरु के पास संकल्प आया आने का और कब पहुंचा? तो देखो मनुष्य कैसे मुक्ति गंवाता है। तुमको प्राणों पर इतना विश्वास है जो तुम लेट लतीफ करते हैं, अपनी मुक्ति गंवाते हैं। हम एक एक स्वास की कीमत करें, तो पता नहीं कहाँ पहुंच जाए। कितना स्वासों की कीमत करनी है, मन और स्वास इकट्ठे हैं। मन को सत्ता प्राणों की है, हम अगर पुरुषार्थ करेंगे तो एक दम मन को जम्प करेंगे।

प्रेमी : भगवान् कई लोग पूछते हैं मुक्ति भाग्य में लिखी है?

भगवान् : भाग्य में है, नहीं अन्दर की सच्चाई चाहिए। भगवान् भी सच्चाई देखेगा कि दुनिया का इनको हीरा पत्थर चाहिए या भगवान् चाहिए? जो यह सच्चाई रखेगा तो उसको यह सच मिलेगा।

प्रेमी : भगवान्, आज लगता है कि मुक्ति की टिकट आपने दी है?

भगवान् : ख्याल किया, टिकट लीया तो पहुंच गये ना। मुक्ति की टिकट

महंगी है क्या? तुम्हारा ज्ञान नहीं है, श्रद्धा नहीं है, विश्वास नहीं है, प्रेम नहीं है। ये भी लगन की बात है। गुरु का करंट है। ये है सच्चा भाव। Light का Current आता है। टक्के के कूलर से पकड़े जाते हैं, तो गुरु Current इतना भी नहीं है क्या? तुम बताओ तुमको फिर यह Current क्यों नहीं आता है?

प्रेमी : भगवान्, आपके पास मुक्ति के लेए आये हैं?

भगवान् : मुक्ति के लिए क्या साधना करेगा? गाया कितनी प्यारी लगती है? भगवान् कितना प्यारा लगता है? अभी प्रिय में प्रिय दुनिया में तुमको कौन है? जो मेरे को प्रिय समझेगा तो घरवाले रुठ जाएंगे। दुनिया तुमको Useless समझेगी। नेम, टेस और दिनचार्य हमारी सब Time से होवे। उसमें हमको कभी भी हम Change नहीं करते जो मेरी Regular है वो Fix है, पाँच मिनट भी हमारा Value वाला है। हमने जो दिनचर्या रखी है, वो कभी चेंज नहीं होती। सुबह का नाश्ता, धूमना, आराम सत्संग, सब Regular ठीक है। तुम एक भी इस बात में नहीं है। "Time is Money, More than Money" जो मेरा Time पाँच मिनट भी देरी नहीं होती है। हर शहर में जिधर भी हम हैं, सब Fix है। जो मेरा Time है सेवा का, प्यार का सब करते हैं, पर अपनी आज्ञादी खराब नहीं करते हैं। सब अपने वश में है ना, सब कुछ वश में हैं।

प्रेमी : भगवान्, ज्ञानी का शरीर अगर बाथरूम में गिरे तो भी मुक्त है?

भगवान् : बाथरूम में अगर ज्ञानी मरे तो ऐसा नहीं बोलना इसकी गति नहीं हुई। वहाँ भगवान् नहीं है? तुम देखो किचन पाण भारी करेगा और बाथरूम Fresh करेगा। तुम बाथरूम को Pure नहीं समझता है। "थान-थानन्तर रहियो समाई"। आकाशवत् भगवान् है। किसी बात में शंका नहीं रखना, मटका ढूटेगा, आकाश आकाश से मिल जाएगा। तुम्हारी करणी काम आएगी ना कि बाथरूम की बात है। आत्मा इथर समान है, खाली, Weightless, Egoless, Thoughtless, जसमें कोई Weight नहीं है। एक बड़े हाथी का, एक चींटी का शरीर लेकर आत्मा घलती है। सूक्ष्म में देखो सबके भीतर ज्ञान स्वरूप है। चींटी भी भागती है कि मेरे को नहीं मारे। अपने को बचाकर चलती है। आत्मा सत् है। ज्ञानी

Contd. 4.

के घर सदा आश्रद, सब मन का भ्रम है।

प्रेमी : भगवान्, मुक्ति के मार्ग में संग दोष रुकावट डालता है?

भगवान् : नहीं नहीं, ये तुमने संग कीया है तो दोष आता है, मैंने किसी से संग नहीं कीया है तो दोष नहीं आता है। तुम संग करते हैं फिर मुक्ति चाहते हैं। जो मुक्ति चाहिता है, किसका Connection नहीं रखता है, अपने साथ ऐसे भगवान् करके देखता है, भगवान् की अंमानत है, सब ठीक है।

प्रेमी : भगवान्, जब चित्त न चाहिता है, ना सोचता है, ना त्याग करता है, तो ना दुखी ना प्रसन्न होता है, क्या ये मोक्ष की अवस्थ है?

भगवान् : जो मुक्ति में, आत्मा में टिक गया, उसको न चाहना है न सोचना है, इसीलिए पूरी न होवे इच्छा तो दुखी सुखी भी नहीं होता है। ऐसे निश्चय में पक्का है।

मनुष्य जन्म मुक्ति के लिए है, Time गंवाने के लिए नहीं है।

"सदा न संग सहेलियां सदा न काला केस....."। राजा भी सदा दे लिए नहीं है, सदा के लिए सिर्फ ज्ञान यज्ञ है। आदमी शरीर छोड़ता है तो क्या लेके जायेगा, ज्ञान ही लेकर जायेगा। जिसको ज्ञान है वो मुक्त है। मैंने कीया ये नहीं। सत् कर्म का फल भी शान्ति नहीं देगा। राजा परीक्षत बोलता है "सांप आए पर काटे नहीं, माना मैं मरूं नहीं, पर मैं मुक्त हो जाऊं ज्ञान सुनकर, निश्चय करके।"

प्रेमी : भगवान्, मुक्ति का यत्न क्यों करें जो पहले से ही मैं आत्मा हूं?

भगवान् : वो तुमको पहले से मालूम है कि तेरा निश्चय क्या है। वो एक भगवान ही है। एक निश्चय की जय है। सृष्टि की प्रलय हो जायेगी, पर मेरी प्रलय नहीं होगी। मेरा जन्म दिव्य है, Sex Born नहीं। जो मेरे को Sex Born समझता है, वो पापी है, पुण्य आत्मा नहीं है। कभी किसने ये कहा है कि जङ भी मैं हूं? मैं ही ये कपड़ा धारण करके आया हूं। व्यापक हूं, सब मैं हूं, ऐसे अपने को विराट करके दिखाओ। कभी सपने मैं भी कर्ता नहीं होगा अन्य आत्मा याद है। असली स्वरूप याद है तो वो कभी कर्ता नहीं होगा। उसके पास मैं मेरा नहीं है, हमेशा Capital। मैं बोलेगा। कभी भी द्वैत की बात उससे नहीं निकलेगी, सब कुछ जब मिथ्या

Contd.5.

है तो किस के लिए क्या कहें क्या करें?

गीता अ०४ में भगवान् अर्जुन की परीक्षा लेते हैं कि सृष्टि के आदि में मैंने ये ज्ञान सूर्यवंशी राजा मनु को दिया, इक्ष्वाकू को दिया, तो अर्जुन का गाथा ही घूम गया कि ये तो कल जेल में जन्म लेके आए और आज सृष्टि की आदि कहते हैं। पर उसको याद है कि पहले भी मैं था, आज भी मैं हूं, कल भी रहूंगा। कई जन्म हमने लिया, कई जन्म सामने वाले ने भी लीया, पर ये जन्म तुम्हारे लेखे हैं। कई जन्म गंवाए, पर ये मानुष हीरा जन्म तुम्हारे लेखे। मुक्ति के लिये मानुष जन्म है। मच्छी जन्म से तैरती है, पंक्षी जन्म से उड़ता है, तो मच्छी को या पंक्षी को कोई सिखाता है क्या? ऐसे ही मैं भी मुक्त हूं, ये ही साधना है, Self को जानना।

प्रेमी : भगवान्, इस देह से मुक्त करें।

भगवान् : देह होवे तो मुक्त करूं ना। तू Already आत्मा मुक्त है। प्राप्त आत्मा को हम अप्राप्त मानके बैठे हैं, बन्धन भानके बैठे हैं कि मैं मुक्त नहीं हूं। तुम क्या होलंगा? ते बोलेगा मेरे को बहुत विकार है। विकार तेरा शरीर में है, Not आत्मा मे। शरार का विकार हमको छोड़ने का है, मैं किधर बनूं न, इस Body से न बनूं। इस Body से न राज्य न बोलूं। Body Consciousness must go. Body में नहीं जाने का है, नहीं तो हमारा स्वभाव निकलेगा। यह पक्की बात करो आज, जो मेरे में देह अध्यास है तो कितना भी वश करूं, गुस्सा नहीं करूंगा, इच्छा नहीं करूंगा, मोह नहीं करूंगा, पर न चाहते हुए भी हो जाएगा, क्यों कि देह अध्यास पक्का है कि मैं फलाणा हूं, Mr., Mrs. हूं पर I am Mistry, माना गुजारत, जो किसी के भी अकल में नहीं आती है। ये अकल वालों का काम नहीं है। गुरुनानक ने कुछ भी नहीं पढ़ा था, अलफ बोला फिर नहीं बोला। "अलफ पढ़ अलख का दूसरे वर्क विसार" अलफ पढ़ो भगवान् का फिर दूसरे सब शब्द भुला दो। ये अलफ का एक अलख पढ़ना पर पत्रा पोथी नहीं। पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ.....। पोथी पढ़कर देह अध्यास पक्का होगा, तुम समझो जो पाठ करता है वह दूसरे के लिये बोलता है, यह पाठ नहीं करता। मैं चार बजे उठता हूं, ये छे बजे उठता है, तुमको सब याद है, मैं ऐसा करता हूं, वह ऐसा नहीं करता है। तुम्हें याद है मैं

उठता हूं, मैं सोता हूं। जब तक देह अध्यास है तो स्वभाव निकलेगा। तुम अपने को मिटाते चलो तो स्वभसव वश में हो जाएगा, ये ही एक इलाज है। ये देह ही हमारा बन्धन रूप है। देह ही हमें सब दुख देती है, देह से सब विकार होते हैं। खाली गुरु देह से मुक्त कराता है।

तुम तैयारी ही नहीं करते हैं मुक्ति की। अभी भी माया की तरफ दौड़ते हैं, उल्लू है। दृष्टांतः जितना दौड़ेगा उतनी ज़मीन तुम्हारी, ऐसे ही तुम भी माया को इस्तेमाल करते हैं। दो रोटी के लिए मथामारी करते हैं। बाकी मना नहीं है कर्म करने की, पर हेत्थ खराब होवे ये कौन सहेगा? तुम ये नहीं समझते हैं ५० में वानप्रस्थ लेना है, फिर सन्यास लेना है। सन्यासी होगा कैसे? गेरुए कपड़ेवाला सन्यासी नहीं, पर सन्यास है अपने मन का नाश, मोक्ष की भी इच्छा न रहे, मुक्ति की भी इच्छा न रहे, तू अपने घर में ज़रूर आजा.....। खुदी गई तो खुदा हो गया।

प्रेमी : भगवान मुक्ति भरे जहाँ भरे पानी तो पानी क्या है?

भगवान : मुक्ति की परवाह नहीं है। जैसे कोई दासी पानी भरे न। मेरे घर में तो मुक्ति दासी हो जाती है उसकी।

प्रेमी : भगवान, मुक्ति की इच्छा बाकी है?

भगवान : जितनी मुक्ति चाहिए तो उतनी Fees भी देगा न, कि ऐसे ही हीरा मिलेगा। मुक्ति खाली तुम शब्द बोलते हैं, पर अन्दर को कितना जानते हैं। कितनी कुर्बानी करते हैं, कितना Be Still हैं, कितना मिटते हैं। कोई दस गाली भी दे तो भी मैं चुप करूं, तो वो Want करे कि उसने इतनी चुप कैसे की। इस ज्ञान में सास बहू बने, बाप बेटा बने, तब है ज्ञान। कौन तुम्हारा Ego निकालेगा? घरवाले ही तो सूआ लगाएंगे, गुरु तो रास्ता बताएगा इधर बैठ कर देखो कितना सफल है मेरे वचन पर इतना मर के जब मिटेगा तो तुम्हारा कर्ग भी गुड़ाको बधाई दे, गुरु कैसे प्रघट होगा तुम्हारी Change देखकर। इस ज्ञान में सुख रोगी नहीं बनना। जे प्रेय खेलण दा चाहीं, तो सिर धर तली मोरी आउ...। तुम्हारी कुछ भी गल्ती होगी तो मेरे को लटकाएंगे और बोलेंगे ये है इनके ज्ञानी फीस, ये है जो बराबर सब तुम्हारो बोले कि ये गुरु का सेवक है। जो इतना चुप किया है। सब तुम्हारी बात Count करे, कुछ भी बनना को पसन्द नहीं है तुम्हारा।

ओम

'प्रारब्ध के चक्कर काटना'

भगवान् तुम्हारी नेष्टा जिस तरफ देखेगा उस तरफ लगाएगा, माया में प्रारब्ध की बात चलती है। इस तरफ नेष्टा पक्की होवे तो यही रास्ता ठीक है। तो प्रारब्ध के कर्म भोगना नहीं पड़ेगा, सब कर्म Zero हो जाएंगे।

आज यहाँ से कई लोग वापिस अपने शहरों में जा रहे हैं। किसने उसको पैगाम दिया है तो वापिस आओ। खुद ही जा रहे हैं। हमको ज्ञान होवे तो किस तरह से जा रहा हूँ। किस तरह कर्म करते हैं। स्वइच्छा से, परइच्छा से या प्रारब्ध से। तो तू Doer है। तुम्हारी ज़रूरत किसको है सब हमारे को छुट्टी तब देंगे, जब पूरी पूरी लगन देखेंगे। मेरे को मालूम होना चाहिए मेरी प्रारब्ध है, स्वइच्छा है या परइच्छा है। उन्होंने देखा कि इसकी लगन पक्की है, माया में भी मन नहीं रखते हैं तो शांति में विघ्न क्यों बनें? कदम कदम पर मेरा ज्ञान होवे।

प्रेमी : भगवान्, आज यह बात अच्छी लगी कि प्रारब्ध के चक्कर जल्दी खत्म करो।

भगवान् : मेरे को आज एक बात याद आ गई प्रारब्ध की, हम हरिद्वार से दिल्ली गए चार मोटर थी। तीन तो आ गई, एक मोटर Late हो गई। रास्ते में उन्होंने चाय पिया, रास्ते में रोकके चल रहा था तो उसको लम्बे रास्ते से आना पड़ा। उनको गुरु याद नहीं आया, चाय याद आई, तो रास्ते में Late हो गई। हम जभी रास्ते में निकलते हैं पूना के लिए या कहाँ भी हम Wait नहीं करते हैं। सीधा घर पहुँचते हैं। देखो प्रारब्ध का चक्कर भी तुम्हारा ऐसे ही रुक जाता है। तुम जल्दी जल्दी नहीं करते हैं कि शरीर पर भरोसा नहीं है, पैसे पर भरोसा नहीं है, सम्बन्धों पर भरोसा नहीं है। तो बताओ गाड़ी को किसने रोका, जीभ ने। जो खाने में भी कुत्ती, बोलने में भी कुत्ती, ये सब प्रालब्ध का चक्कर था।

प्रेमी : प्रारब्ध जल्दी खत्म करके फिर इधर आओ भगवान् इसे खोलिए?

भगवान् : हमारे पास जो लड़कियाँ हैं उसकी प्रालब्ध कब आती है कहाँ गई उनकी प्रारब्ध?

तेरे को प्रिय में प्रिय चीज़ क्या है? अपने से निर्णय करो वो छलाँग मारेगा कैसे? कैसे नहीं पूछेगा? कल तेरी मौत हो जाए आज क्या Improvement है? तेरा ध्यान किधर है? तेरा मन किधर है? बाकी संसार तो चलेगा। तेरी अर्थी के पीछे भी संसार चलेगा। ऐसे ही श्वास बेफार चलेगा, मरने तक काम धंधा चलेगा। मूर्ख अन्धे ने जन्म गंवाया। तुमको मालूम नहीं है कौन री सीढ़ी पर बैठे हैं। अपने को Misguide करते हैं। मेरे लिए कुछ भी करने को न बचे ये हैं पुरुषार्थ तो मैं किसी को भी इन्तज़ार में नहीं रखेंगे। सबके साथ लेना देना करके प्रारब्ध के कर्म पूरे करेंगे। सर्व कर्मानि परित्यातजे....। ये कहने से नहीं होगा पर सब के साथ फर्ज़ पूरा करके छोड़ना है। भाग के नहीं छूटना है। ये कायरो का काम है।

प्रेमी : भगवान प्रारब्ध के कर्म समाप्त हुए तो जितना भी अज्ञान है वो कैसे समाप्त हो?

भगवान : प्रारब्ध के कर्म भी तभी बन्द हुए जब तुमने करना बन्द किया, Doer पना बन्द किया, इधर भी जो अज्ञान है तो तुम चुप करेंगे, अज्ञान के कर्म ही नहीं करेंगे, अभी ज्ञान की रोशिनी में तुम चलेंगे तो अंधेरा है ही नहीं।

प्रेमी : भगवान, प्रारब्ध देह की होती है और पुरुषार्थ से उसको बदला जा सकता है तो प्रारब्ध तो फिर नहीं बनी न भगवान।

भगवान : प्रारब्ध है पर तुम्हारे आज के पुरुषार्थ से जैसे आगे जन्म से अभी तुम आए, प्रारब्ध का कर्म लेकर आए, आज का पुरुषार्थ तुम्हारी प्रारब्ध को खलास कर देगा। तुम ही नहीं रहोगे तो प्रारब्ध किसकी होगी, जो कर्म करके आया है पहले। अभी समझो हमने पुरुषार्थ किया तो वह याद भी नहीं है कि प्रारब्ध होती है। अभी क्रियमान कर्म भी नहीं है। अभी Present में हम कर्म भी नहीं करते हैं तो वह भी Dull हो जाता है। संचित कर्म प्रारब्ध कर्म क्रियमान कर्म सब Dull हो जाता है। क्यों कि कर्म ही नहीं करते हैं। खलास। ज्ञान भया....। ज्ञान की ज्योति जले, पेट में जैसे अग्नि जले, जो कोई संकल्प ही न रहे। कोई बात भी न रहे। प्रारब्ध खलास।

प्रेमी : प्रारब्ध के चक्कर को पुरुषार्थ से काटा जा सकता है इसे खोलिए।

भगवान् : आज का है पुरुषार्थ, कल की है प्रारब्ध। प्रारब्ध है छोटा बच्चा, पुरुषार्थ है जवान। तो वो उससे लड़ सकता है। और जो पुरुषार्थ करता है वो जीत सकता है। धीरे धीरे अपनी प्रारब्ध को मेट सकता है। फिर वो नया कर्ग नहीं बनाता है। प्रारब्ध तो टके पैसे की बात है, प्रारब्ध है हमारे शरीर की, कि उसका खाता हूं-२, पति का खाता हूं। ये हैं प्रारब्ध, ये कोई सच थोड़ी है। बेटा, पति कंसे खिलाता है? जो हम प्रारब्ध इनसे Mix करें? हमारी प्रारब्ध है ही नहीं? पुरुषार्थ भी नहीं है? सत् ही सत् है। आप सत् कीये सब सत्। परमात्मा है सत् उनसे सब सत् ही सत् होता है। प्रारब्ध और पुरुषार्थ ये हैं जैसे बचपन में बाल मंदिर में सिखाते हैं उनके लिए है वो लड्डू खिलाते हैं जैसे उनका मन टिके भगवान् में। तो जो टिक गया तो प्रारब्ध पुरुषार्थ सब खेल खतम। न रहेगी प्रारब्ध न रहेगी तुम्हारी भावी। सत् ही सत् रहेगा, बाकी झूठ नहीं रहेगा।

प्रेमी : भगवान् प्रारब्ध से जल्दी कैसे छूटे?

भगवान् : हमारी चुप है, मौन है, मौन में अन्दर फल पकता है। बाकी इससे बात किया, उससे बात किया तो गया काग से। तुम्हारे उपर नाम पढ़े कि जीते जी वो मर गया। हम बोलते हैं अन्दर का अज्ञान का बीज जल जाए। कभी हमारे उपर मौत का नाम आएगा कि ये मर गया है, जीते जी तर गया है। जिस मरने से जग डरे सो मौ को आनन्द। मरने से पहले मरना है, खुशी से ख्वाब करो, मेरा कुछ है ही नहीं। हमने एक योगी को कहा जभी तू धरती पर आए तो कौन सी Will करके आए। जीते जी हम कितना छोड़ सके, चाहे बेटा, चाहे भगत। कोई भी मेरे उपर फर्ज़ Duty नहीं है। सर्व धर्मान। मैं जो एक ही आत्मा हूं, उसकी शरण लेनी है, क्यूं न पक्का धर्म पाले, स्वधर्म। स्वधर्म में सब को तृप्त करेंगे।

प्रेमी : भगवान्, प्रारब्ध में कर्म कैसे काटें?

भगवान् : जो निरइच्छा है उसको प्रारब्ध है ही नहीं, इच्छा है तो प्रारब्ध है। ये ज़रूरी है निश्चय कि जगत मेरे में रहा ही नहीं है। तू मैं रही नहीं,

तभी सहज समाधि में आएगा, जो निरोध विरोध करे ही नहीं। अभी तुम कोई स्थिति में ही नहीं है, नहीं तो लगातार इसमें चलते चलो जो कहाँ तक आके मेरी end हो गई जो कुछ रहा ही नहीं। चलते चलो प्रारब्ध के कर्म काटो। चलते चलो कि ये भी हो गया, ऐसी स्थिति आनी चाहिए, न इच्छा रही न अहंकार, न द्वैत द्वेष, तभी फिर मन को विचार देना नहीं पड़ेगा। सहज स्वभाव हो गया, फिर त्याग ग्रहण नहीं रहेगा। पर तू माया में है तो अभी तुम्हारा काम शुरू ही नहीं हुआ है। ये तो अपनी बात है, कहाँ तक मैं लगातार चल रहे हैं। हमको अच्छा नहीं लगता है, देरी करें। तुम्हारे हाथ में ही नहीं है ये, काम ही नहीं अपने उपर लेते हैं। तुम देखो कौन ऐसा है जो लगातार इसमें ही रमण करता है। इस बात के लिए ही बैठा है, दूसरा देखता ही नहीं है, अपने में ही गुम है।

प्रेमी : दादा भगवान की Point चली कि ज्ञान से मन की बीमारी तन की प्रारब्ध भी खत्म हो जाती है। कैसे?

भगवान : जीव सृष्टि का चक्कर काट के ईश्वर सृष्टि में आ जाओ तो प्रारब्ध कहाँ रही?

प्रेमी : हमारी प्रारब्ध कट जायें उसके लिए क्या पुरुषार्थ है?

भगवान : समझो आज तुम शादी में चले। तुन वहाँ जाकर खायेंगे, बकेंगे, काम करेंगे, हम तो चक्कर लगा कर Stage पर Photo निकाल कर, उसने समझा यह आया और आ जायेंगे, एक मिन्ट में। न खाया न पीया हमको घर में अच्छा खाना मिलता है तो जहर क्यों खायें? तुम तो शादी में जायेंगे खायेंगे, पीयेंगे, मनोरंजन करेंगे, तो यह चक्कर किसने बनाया।

ओम

"आकाश अभूतवाणी" 'एकरस'

(1) हम तो आत्मा सुनके बेहोश पड़ गये, हाथ-पैर कट गये, जो द्वैत-द्वेष कर सकें। गुरु को तुम बोलतें हैं 'मेरा विकार निकालो, पर गुरु तुम्हारा विकार थोड़ी निकालेगा, पर याद दिलाएगा, तू देह नहीं है, देह से कर्म ही ना कर। "गुरु ने आत्मा कहा, हम तो मर गये" में नहीं हूं, आत्मा है तो सारा दिन अन्दर मैं Easy होता था, तो मैं आत्मा हूं, तो डर क्यों? ये खुशी रंज क्यों? हमको गुरु बोले Danger Place पर पहुंचना, हम बोलते थे दूसरा है नहीं, चलो चले, गुरु पीछे पहुंचता था-हम पहुंच जाते थे। कभी २० साल के बाद कोई आये हम अपने से पूछते थे, खुशी क्यों? आज आ रहा है-खुशी है, फिर ये खबर सुनी तो मर गया है, तो खुशी खत्म हो जायेगी। आज बताओ, किस बात की खुशी करें? चाहे कोई ज्ञान लेता है, अपने को मुक्त करे, मेरा की? कोई मेरे से चला जाता है, तो भी ठीक है-बैठा है तो भी ठीक है।

(2) तुम्हारे को तो कोई हिलाता है तो तुम हिलते हैं, हमारे को तो कई लोग हिलाने आये, पर तुमको दिश्वास है कि भगवान को कोई हिला नहीं सकता। कोई योगी, महायोगी, महाईश्वर भी नहीं हिला सकता- हम उस मर्दी, गंदी पर बैठे हैं, जहाँ कोई उतार नहीं सकता है और दुनिया की कुर्सी में टॉचनी लगी पड़ी है। पैसे से ये ब्रह्म-पद नहीं मिलता है, पर कोई Value करेगा - वो करे जो खोज में रहेगा सो पायेगा।

(3) ये मेरा परम पद ओम से भी ऊपर है - अति सूक्ष्म है-२, जहाँ ओम भी नहीं बोलना पड़ता है। ओम भी एक वाणी का रस है - सब वाणी है। शब्द भी उसको नहीं सुनाई देगा-जहाँ बिल्कुल शान्त है, Silence है। जिसको ब्रह्म का आनंद है वहाँ न भजन है, न कीर्तन है, न शिवोहम् है - उधर खाली सत्य है। वहाँ देहध्यास खत्म हैं, अति सूक्ष्म के लिये हमको अति सूक्ष्म होना पड़ेगा।

(4) आज मैं इतना अति परे हूं, जो कोई भाई-बहन नहीं लगता है। बहन-बहन नहीं लगती है, बेटा-२ नहीं लगता है। ये तुम मेरा आर्दशा देखना सपने में भी कोई नहीं है। इससे भी अति परे जैसे कोई गरीब हो जाता है, ये फिर इतना गरीब हो जाता है, ये फिर इतना अतीत दृश्य

Contd.2.

मात्र से न्यारा-२ सबका प्यारा। तुम रोज किसी हद में खड़े हैं-इसका Letter नहीं आया, इससे बात नहीं हुई। किसका दृश्य किसका शब्द, किसका कर्म, किसकी बात तुम्हारे दिल में आती है। हम रोज़ अति-परे-२ होते जाते हैं।

(5) सब प्रकार का सुख ब्रह्म-ज्ञानी में लहर पैदा करने के सिवाय समा जाते हैं, वो कैसे? हमको किसी भी चीज़ का भान नहीं रहता है, तभी तो सभी तरह का सुख मिलता है। तिनके जितनी भी खुशी नहीं आती है, तभी तो ईश्वर इच्छा से आता है। तुम्हारे को ईश्वर इच्छा से क्या मिलता है? हमको तो आकाश से मिलता है। मेरा तो आकाश से सम्बन्ध है। तुम्हारा तो कोई सम्बन्धी है, तुम्हारे को आकाश से क्या मिलता है? आकाश से कितना सम्बन्ध है? तुम्हारा मैं-मेरे का खेल चलता है। मेरा घर, मेरा बेटा, मेरे को इसने ये चीज़ दिया। उसको आकाश से चीज़ें आती हैं, तभी तो विचलित नहीं करती है। हमारी चीज़ आकाश से आती है, Use भी ऐसा करते हैं - आकाश की तरह। हम कार में भी बैठते हैं - फकीर भी आता है, हम देखते हैं भगवान ने कैसे रूप धारण किया (जैसे मन्दिर की मूर्ति देखा)।

(6) हमारे पास सुबह से लोग हैं - कोई दुखी है, कोई सुखी है। कई लोग आयेंगे, लाख आयेंगे पर हम खफे नहीं होते हैं। किसी बात में खफे नहीं होते हैं। ये मेरा कसम है, हम हमेशा एक रस हैं, हमेशा Mood ठीक है, खफे क्यों होवे?

(7) अद्वैत कैसे पकड़ा होवे? शुरू से आद्वैत को पकड़ा है, इतना अन्दर में मेरे को ज्ञान है। जिससे हमको कोई द्वैत होवे, हम तो उसकी जूती भी साफ करेगा, पॉव भी साफ करेगा, भगवान मेरे से राजी होवे। इतना अद्वैत का ज्ञान है। तू बोलता है - वो हैं, मैं भी हूं, सब ऐसा करते हैं-तू हैं, मैं भी हूं।

(8) झुकना - हमको सास बोलते थे, आप सारा दिन भगवान-२ करते हैं, हमने बोला तेरी आश्चिष्ट होगी तो पूरा रास्ता मिलेगा। हमने छोटे से छोटे, से भी माफी लिया है। चाहे वो बाहर होवे, हम चिठ्ठी ऐसा लिखेगा झुकके, जैसे मेरा अहंकार नाश होवे। और लिखो और झुको-२।

(9) होशियार माई - हमको दुनिया में सब बोलते थे ये न तुम्हारे घर में आके रहेगी, तुम कैसे गुज़ार करेंगे? वो बहुत होशियार माई है। हम हमेशा बोलते थे, मरे हुए को कौन मारेगा?

(10) मेरे लिये सब बोलते थे ये पक्के हुए हैं, मेरे से नहीं बोलेगा तो ये Bedminton क्यों खेलते हैं? या माया क्यों रखते हैं? इस उसका काम क्यों करते हैं? हम किसकी जगह खरीदते थे, किसको विक्री करते थे - जो लोग पर शंका नहीं थी, बाहर रहते थे फिर उन्होंने ही हमारे कागज़-पेपर वापिस लिया। १० महिने की माई का जैसे सब छूट जाता है, पर छोड़ने की इच्छा हमने नहीं किया था।

(11) Ownself:- मैं छुटपन से ही Ownself हूं। मैंने टके का आटा भी किसी से Mix नहीं किया है। टके-२ की चीज़ में भी मैं Ownself हूं। यूं-यूं (गोल-२ हाथ फिरा के) करके गधे छोड़े, स्वामी सोया नींद में। करोड़पति हमारे पास आता था, Bus का किराया एक रुपया हम खर्चते थे- उसको फकीर करके दिखाया।

(12) लोग पूछते हैं अन्दर की खोज कैसे करें? अभी ये ज्ञान अन्दर का है या बाहर का है? हमने जैसे ही ब्रह्मज्ञान लिया, तो जगत् मिथ्या किया। बेटे को बेटा, बेटी को बेटी करके देखते थे तो ये बात कैसे होती थी? शुरू से ही मुक्ति के लिये पुरुषार्थ किया है तो आज कोई बात बची नहीं है। मेरे घरवाले कहते थे - ज्ञान लेना चाहिये आप जैसे, बाकी ज्ञानियों को तो नमस्कार है जो सारा जगत् देखते हैं। बाहर से सुन्दर रूप लेके रखके बैठे हैं, अन्दर संकल्प विकल्प चल रहे हैं।

(13) वृत्त - हमने Life में इतना वृत्त रखा - किसके घर का पानी, किसकी मोटर नहीं, कोई चीज़ नहीं, कोई कीर्ति नहीं - इसीलिए तो हमको कोई Sense नहीं बचा है। अभी ऐसी वृत्ति है - क्या जप, क्या तप, क्या संकल्प, क्या विकल्प कुछ मालूम नहीं है। हमने ये वृत्त लिया - सेवा नहीं लेगा। मैं बोलते थे - इतने मैं माई को आत्मा याद हो गई समझो जो ये सेवा करके भूलायेगी। हमको नर्क नहीं देखना चाहिए जीते जी। अभी कितनी शान्ति है, जो किसीका नाम रूप याद नहीं आता है।

(14) कुछ याद नहीं है - कोई भी दुनिया में शरीर छोड़ेगा तो उसे कोई

न कोई याद आयेगा, जिसको मन में रखकर बैठे हैं। हमको सारे दिन में एक ख्याल भी नहीं है, एक संकल्प भी नहीं है, एक भी मनुष्य अन्दर में नहीं है। प्रलय ऐसी लगी पड़ी है जो मैं हूं, तो मैं हूं ही नहीं - दुनिया में ये सब चलता ही रहेगा। मैं ना - का पाठ पक्का करना है, दिन में भी प्रलय लगी पड़ी है - रात को भी। सब Passing Show है। शरीर Automatic चल रहा है, सब Automatic हो रहा है - मैं चलानेवाला नहीं हूं, सत्संग भी करने वाला नहीं हूं। हमारे दादा भगवान का शरीर शान्त हुआ तो ऐसे लगता था -

मैं सत्संग कैसे करूं? श्रद्धावालों ने बोला, जैसे मैं कर्ता होकर न बात करूं।

(15) ३० साल धीरज - तुम बोलते हैं - भगवन मेरा शरीर Useful होवे, वो भी ईश्वर इच्छा से Useful होने का है। दादा भगवान के सामने हमने अपने को ऐसा शान्त पद में रखा, जहाँ कुछ करना ही नहीं है। तुमको भी ऐसा शान्त पद को पहले ज़रूर प्राप्त करना है।

(16) बाहर का आधार नहीं - लिखने में, पढ़ने में सब पड़े हैं। सब केवल वाणियाँ लिखते हैं, मैं ने तो कभी दादा भगवान की Photo भी नहीं रखी। एक वाणी की Copy भी मेरे घर में नहीं मिलेगी। सब जो है, इधर Heart में रखा।

(17) कीमत - हमने एक-२ स्वास की कीमत किया है, माया से बचा के रखा है - तो, तुम भी मेरे Time की Value करते हैं।

(18) Own - निश्चय कर्मातीत हूं। योगी किसको बोलते हैं? जो कर्मातीत है। अपने से पूछो तो तुम कर्मातीत है? हमको तो सारी Life में याद नहीं है कोई द्वैत का कर्म किया होवे? प्रकृति ही ऐसी थी जिसमें कर्म बनाने की ज़रूरत ही नहीं थी। बचपन से सत्संग था, घर में भी वातापरण - सादगी सफाई। मन की Cleanliness, न पैसा, न व्यवहार, नहीं तूं मां का कर्म - जगत से नाता ही नहीं था, न इस उस की बात। आपे ही Natural इसको कोई द्वैत का कर्म ही नहीं करना पड़ा। जो योगी है, वो द्वैत रहित है, भोगी है जिसको पैसे में वासना, देह में वासना है - तो द्वैत का कर्म करता है।

(19) इसके पहले हमको मालूम ही नहीं था, देह भी है। अभी जितना घोड़े की खातिर करते हैं, पर उतना पहले ध्यान भी नहीं था कि इसको ये चाहिये, वो चाहिये, तो द्वैत रहित हो गये, ऐसा ज्ञान लग गया। समझ में आ गया, वो ज्ञान क्या है? कर्मातीत हुआ - द्वैत रहित हुआ। जल्दी Colour ऐसा लगा जैसे साफ White कपड़े पर चढ़ता है, कोई दाग नहीं है। Colour जल्दी नहीं लगता है। गे बोलते हैं मैं ने तो अभी ज्ञान समझा।

(20) पर हमने शुरू से देखा - जगत है ही नहीं। जगत मन की कल्पना है। जगत की कल्पना में मैं क्यों जाऊँ? इसीलिए हमको कुछ छोड़ना नहीं पड़ा है। अन्दर की सच्चाई काम में आती है। ऐसा तो अज्ञान था तब तो देह मिली। पर हमारी अज्ञान पर नज़र गयी तो मेरे को ज्ञान कठिन नहीं लगा। सहज Improvement हो गयी। ये भूल गये - ये कौन, वो कौन - तो तैयारी हो गई। ये हमको गुरु से अच्छा नहीं लगता था कोई उजरा देया वापसी करे। मालूम भी था मैं निःइच्छा हूं या निष्क्रम हूं, पर Life ऐसी थी। सबको देखना चाहिये वो कितना हम सब Clean है, बाकी कौन सी Cleanliness चाहिये?

(21) वैराग - हम दो साड़ी में चलते थे, तो आज से भी ज्यादा खुश थे। मालूम ही नहीं था - दो क्या, एक क्या है। एक Pin भी नहीं सम्भालते थे। कुछ भी अपने लिये खरीद नहीं करते थे, ये Body इतनी Useless है। Useless Body के लिये एक कोड़ी भी खर्च क्यों करें? मोटर में भी नहीं चढ़ना है, हमने ऐसा करसम उठाया था।

(22) शुरू में हमने ज्ञान सुना, एक दिन Garden में सुबह दादा भगवान जैसे वाणी सुना रहे थे - हमको ऐसा अनुभेद हो रहा था - बराबर कृष्ण भगवान गलियों में आकर मुरली मेरे सामने बजा रहा है।

(23) तुम्हारे भगवान को हजार करोड़ आँख है - तुम सौ तो बनाओ। जो Egoless होगा, उसको भगवान १०० आँखें देगा। जो कहाँ भी जाकर Helper बनता है, पर जिसको खाली अपना सुख याद है, वो अपने सुख में सुखी है - वो विष्टा का कीड़ा है। दादा भगवान किसका बोझा देखता था - Help करता था। दानी नहीं बनो, दानी बनेगा तो Help नहीं करेगा। पर जैसा सहज भगवान तुमको देता है, ऐसा खर्च करते हैं?

(24) आप मेरे को कितना भी सुख दो, मेरे को आनंद अयेगा? पर जिस बात में तपस्या होगी उसमें आनंद अयेगा। तुम इस ज्ञान में तपस्या से डरते हैं, हमको तपस्या में आनंद है। रोये, पीटे, गले, मरे, पर इसको किसीसे भी मिलने नहीं देगा, तो क्या करेगा? मैं देह से कर्म नहीं करायेगा तो क्या होगा? मैं उसको बिल्कुल चुप करके बैठायेगा, पहले ही सब जगह आत्मा है, आत्मा कहाँ नहीं है? मनुष्य सात जन्म में भी तृप्त नहीं होगा, अगर इस भूत को तृप्त करने की करेगा। पर, मैं दूसरे को तृप्त करने की करेगा।

(25) दादा भगवान शुरू से ही सबको अकेला ज्ञान देते थे, जैसे कोई किसीकी बात नहीं सुने। इधर तुम दूसरे की बात सुनते हैं, तो क्यों?

ओम

'आत्म - दृष्टि'

ऐसा चश्मा आत्म दृष्टि का पहनो जो अलग-२ ही नहीं देखो, आत्म दृष्टि रखो तो सब जगत की प्रलय हो जायेगी।

प्रेमी : योग वशिष्ठ में था वो न देह धारी है, न मनधारी है, समर्स्त प्राणियों को सत्ता और असत्ता रूप में वर्त रड़ा है। वह न देहधारी न मनधारी है, वह अनादि एवं अनंत है। सर्वत्र सत् और असत् रूप में वर्त रहा है। इसमें भगवान असत्ता समझ में नहीं आया।

भगवान : कैसा भी देखो तो वो ही है, सत्ता है तो उसकी, नहीं सत्ता दिखती है तो भी वही है। तू सत्ता दे या न दे, उसको कस नहीं लगती है। तुम कैसी भी दृष्टि से देखो - देह दृष्टि से देखो, आत्म दृष्टि से देखो, चोर दृष्टि से देखो, नीच दृष्टि से देखो। तभी गीता में कहते हैं सब चोर चण्डाल जुआ सब में मैं ही हूं! जुआ में क्यूँ बोलता है मैं ही हूं क्योंकि समान दृष्टि हिले नहीं। समान दृष्टि में कोई भी विकार नहीं है। समान दृष्टि एक ही दृष्टिं है। अलग-२ देखेंगे रजो गुण में। तमोगुण है एक ही व्यक्ति में भगवान मानना। हम जब छोटे थे तीर्थयात्रा में गये - बनारस में देखा शिव शिव करते थे, वृदावन में देखा कृष्ण कृष्ण, पंजाब में गये वहाँ नानक बोला। सब अलग-२ देखते हैं, पर यकी दृष्टि किसी को भी नहीं है। सब नाम रूप में हैं, किसीने देखा समान दृष्टि से? एक ही तत्त्व को जाना तो सब जाना। पर एक तत्त्व को जो अपने में नहीं जाना तो कुछ नहीं जाना। हमारी दृष्टि बताओ कैसी हो? तुम इतना विचार करोगे तो सुख पाओगे। बेटों से बैठेंगे तो बाप जाकर बनेंगे, तो ब्रह्म भी भूल गया। तुम यह ब्रह्मज्ञान नहीं समझते हैं कि आत्म दृष्टि क्या होती है, आत्म विचार क्या होता है। तुम सब एक भी बोलो कि मैं आत्म दृष्टि में सारा व्यवहार चलाते हैं। तुम्हारा सब केस सुलझ जायेगा। आत्म दृष्टि से। तुमको यह समझ ही नहीं है कि आत्म भावना से व्यवहार चल सकता है। तुम समझते हैं मैं देह से ज़रूर पति हूं, बाप हूं, तो कर्म बनेगा।

प्रेमी : भगवान देह से चलते हैं।

भगवान: आज समझो तो तुम आत्म दृष्टि डालो तो उसमें क्या कमी है,

Contd.2.

पर किसमें यह विश्वास नहीं आता है कि तुम आत्म दृष्टि में मिलाप करते हैं।

प्रेमी : व्यंवहार ही नहीं समझा है, तो आत्म दृष्टि क्या समझें?

भगवान : आत्म दृष्टि, आत्म विचार, आत्म चिंतन ज़रूरी है। तू जन्म से ही आत्म रूप है। नेष्ठा से भूल गये कि मैं फलाणामल हूं। मॉ ने बोला और तुमने Yes किया। तुम अपने को ज्ञानी समझते हैं पर ज्ञानी तो आत्मा, देह तो जड़ है - पत्थर की शिला - वह तुमने नेष्ठा नहीं किया कि जन्म से तू आत्म रूप है, उस मेले झामेले में तुम भूल गये हैं, गलत व्यंवहार में। तुम फिर बोलते हैं मेरा स्वभाव निकल आता है, मेरा व्यंवहार निकल आता है। ऐसे हो नहीं सकता है।

प्रेमी : आत्म दृष्टि के लिए Practice करनी चाहिए?

भगवान : Practice क्या है? पहले नेष्ठा हो। आज तू मर्द है, मैं स्त्री हूं, ये तुमको भूलेगा। यह स्त्री की पौशाक मैं नहीं, मर्द की पौशाक मैं नहीं। You are Mistry।

प्रेमी : भगवान पूरा निश्चय है आपसे आत्म दृष्टि लेकर जायेंगे।

भगवान : आत्म दृष्टि रख्ने पर अपनी देह भी भुलाओ, दूसरे को भी देह करके देखो ही नहीं। ये सब चमार हैं। आत्म घाती जगत कासाई। कासाई बकरा भी देखता है, तलवार भी देखता है, तंभी काटता भी है, पर सदना कासाई है वो कहता है तलवार भी आत्मा है, बकरा भी आत्मा है, काटने वाला भी आत्मा है - तो मैंने किसको काटा? एक आदमी आया बोला रास्ते में सूअर काट रहे हैं - हमने बोला सूअर किसको बोला? मैंने विश्वास नहीं किया कि सूअर क्या होता है। गधा क्या होता है? घोर चण्डाल क्या होता है? आत्म दृष्टि से सब एक ही है। अलग-2 तुम व्यंवहार रखते हैं तो अलग-2 दिखाई देता है। आत्म दृष्टि से कोई मेरे से जुदा नहीं है जिसको मैं याद करूँ। तुम बोलेंगे भगवान मेरे को याद कर रहे हैं। तेरे को माना किसको? नाम रूप को? तुम जाकर याद करो, मेरे से कोई जुदा है, ही नहीं। आत्म दृष्टि है तो जो आता है सब मैं ही है।

ओम

दुख में धीरज सबसे अच्छा है। बैकार चिंता नहीं करनी चाहिए।

आत्माकार को डर और निराशाई कभी नहीं आती। मुस्तिष्ठत में मुस्कराना सीखो। मन को गिराना नहीं, चाहे दो ही घण्टों में फॉसी पे चढ़ना हो तो भी अपना यह समय खुशी से गुजारना चाहिए, शायद फॉसी का हुकुम बदल भी सकता है। हम लगने खालों से बैठकर मुस्तिष्ठत बनाते हैं। यकीन भी नहीं है कि मुस्तिष्ठत आएगी, नहीं भी आनी हो, हम ख्याल को गिराकर बैठते हैं तो अपने आप मुस्तिष्ठतों में आते हैं। उंधें(उल्टे) ख्याल आते होवे पर उंचे ख्याल करना हमारे वश में है, क्यों न सदा ही सरोह (अच्छे) संकल्प करे। ये आदत यना दो। युरा चाहे अच्छा ख्याल करना हमारे हाथ में है। पर आत्मा का निश्चय जभी नहीं है मन में बुरे ख्याल आ जाते हैं "Don't think with your mind, surrender unto God"

प्रारुद्ध से तो कोई नहीं भाग सकता, जो हीना है वह तो अवश्य होगा। हम ख्याल करके कहते हैं "शल ऐसा न होवे, ऐसा होवे"। सदा ही अपनी मर्जी मुताबिक कुछ होता नहीं है, ना ही फिर अनहोनी होती है। हिम्मत रखो तो परमात्मा सदा ही तुम्हारे साथ है। "The only thing we have to fear is fear itself" डर लगना ही डर का कारण है। चिंता और डर निकालके अशोक रहो। मुस्तिष्ठत का मुकाबला हिम्मत से करो पर इन्तज़ार, चिंता या डर कभी नहीं करो। सच पर साहिब राज़ी है। भगवान मददगार है, सभी को मुस्तिष्ठत के समय आकर मदद करता है। यह पक्का करो, विश्वास करो, नहीं तो अपनी चलाना नहीं, भगवान के किए पर ना ही नाराज़ होना। "जो तुद भाये साई भली कार"। इच्छा काहे की, चिंता काहे की, कल की चिंता आज मत करो। आज का दिन खुशी से गुजार, हिम्मत से गुजार। निराश होना नाउम्मीद होना, नास्तिक होना है। दिल रख दरगाहे हुजूर, मन खफा रखोगे तो बीमार हो जाओगे। जीना हो तो हिम्मत से, आनंद से। इतना खुद को व्यरक्त रखो लिखने पढ़ने में भगवान के ज्ञान में जो चिंता करने का समय ही नहीं मिले। खाली बैठने वाले को मन सताता है, बुरे ख्याल आते हैं, निरासायें आती हैं। पहले ही खबरदार हो जाओ। क्या नाहीं दर त्वेरे। भगवान ने

सदा ही सहायता की है। यह हमने सुना है, सुनते ही आते हैं "अंधकार में रोशनी देखो" गर्मी और फिक्र के समय खुशी मनाये। भगवान के गुण गाये, बईमान नहीं बने, मन जो कुछ कहे उसे नाकार करे ऐसे वैसे नहीं होगा, ऐसा जवाब भन को दिया करो, हजार बार मन ने डराया होगा पर हुआ तो कुछ नहीं, फिर आज क्यों डरें? ये राग पक्का करो मन डराता है, पर होता तो कुछ भी नहीं, फिर आज उसकी क्यों मानुं, क्यों डरूं? तुफान भी जितने समय के लिए आया, फिर शांत हो गया, फिर आखिर तो सब गुज़र जाता है। मुश्किल वक्त आता है तो अकल भी उस वक्त आ जाती है। भगवान सदा ही हमारे साथ है, सिर्फ निश्चय की कमी है। विश्वास रखो इसके पहले भी कितनी मुश्किलातें आई और चली भी गई। बादल काले छाये और फिर कैसे बिखर गये। प्रारब्ध अनुसार मेरे दुःख सुख मेरे को ही भोगने हैं। दिलगीर न हो, अपने को पूछो तो क्या होगा ज्यादा से ज्यादा, मौत, वह तो शरीर को होगा ना - मैं तो अजर अमर आत्मा हूं।

खौफ और चिंता में वो रहे जिसका धणी साई (खासम, गुसाई) न हो, पर तू तो भाग्यवान है, जो सर्व शक्तिमान प्रभू तुम्हारा हो चुका है।

ओम

